इकाई 3

आवारा मसीहा (विष्णु प्रभाकर)

इकाई की रूपरेखा

3.0 परिचय

3.1 इकाई के उद्देश्य

3.2 आवारा मसीहा : व्याख्या

3.3 आवारा मसीहा : सार

3.3.1 जीवनी कला के परिप्रेक्ष्य में

3.3.2 संवेदनशील हृदय का अंकन

3.4 आवारा मसीहा का उद्देश्य

3.5 आवारा मसीहा की संवाद योजना

3.6 चरित्र–चित्रण

3.7 भाषा शैली

3.8 सारांश

3.9 मुख्य शब्दावली

3.10 'अपनी प्रगति जांचिए' के उत्तर

3.11 अभ्यास हेतु प्रश्न

3.12 आप ये भी पढ़ सकते हैं

3.0 परिचय

उपन्यास एक प्राचीन विधा है। उपन्यासकार एक चित्रकार की भांति होता है जो भावनाओं में भीतरी सत्य की एक झलक का तथा अंतरात्माओं के संघर्षों का वर्णन करता है। सही अर्थों में उपन्यासकार कल्पना नहीं करता। वह केवल आह्वान करता है। उसका अपने पात्रों पर कोई नियंत्रण नहीं होता, चाहे इनका अस्तित्त्व सुदूर अतीत में हो या वे हमारे वर्तमान के निकट हों। ये पात्र स्वाधीन होते हैं।

'आवारा मसीहा' विष्णु प्रभाकर द्वारा रचित उपन्यास है जिसकी शैली आत्मकथात्मक प्रतीत होती है। इस उपन्यास में मानवतावादी भावना को चित्रित किया गया है। उपन्यास के मुख्य पात्र 'शरतचंद्र' के माध्यम से रूढ़ियों के परित्याग पर बल दिया गया है। कुरीतियों का डटकर विरोध किया गया ह। धर्म की आढ़ में मनुष्य स्वच्छंद न हो ऐसी कामना की गई है। उपन्यास 'आवारा मसीहा' में माना गया है कि जब परिस्थितियों से विवश होकर मनुष्य कुछ कर बैठता है, जो तत्कालीन धर्म एवं समाज की दृष्टि से बुरा हो तो मनुष्य सचमुच बुरा नहीं हो जाता है। परिस्थितियों के द्वारा ही मनुष्य निकृष्ट बन जाता है।

'आवारा मसीहा' में विष्णु प्रभाकर ने नारी के समानाधिकार की बात की है। मुख्य पात्र शरतचंद्र के माध्यम से नारी की स्वतंत्रता को महत्त्व दिया गया है। 'शरत' की नारी जीवन के प्रति संवेदनात्मक दृष्टि को उजागर किया गया है। उसने माना है कि स्वस्थ समाज व राष्ट्र की संरचना नर–नारी के परस्पर समर्पण व त्याग का ही प्रतिफल है। इस उपन्यास में आधुनिकता का पुट दर्शित है।

3.1 इकाई के उद्देश्य

इस इकाई के अध्यन के पश्चात् आप समझ सकेंगे –

आवारा मसीहा के पात्र शरतचंद्र का स्त्रियों के प्रति संवेदना तथा मानवतावादी पक्ष को व्याख्या के माध्यम से;

आवारा मसीहा के सार को;

आवारा मसीहा के पात्रों के संवेदनशील ह्रदय के अंकन को;

आवारा मसीहा के उद्देश्य तथा संवाद योजना को;

आवारा मसीहा के पात्रों के चरित्र–चित्रण को;

आवारा मसीहा उपन्यास की भाषा–शैली को;

3.2 आवारा मसीहा : व्याख्या

मोतीलाल मानो आकाश में उड़ने वाले रंगीन पतंग थे और भुवन मोहिनी थी निरंतर घूमते हुए चक्र के समान सीधी–सादी प्रकृति की महिला। उसका कोमल मन सबके दुःख से द्रवित हो उठता था। इसीलिए सभी उसको प्यार करते थे, बड़े उसकी सेवा–परायणता पर मुग्ध थे, छोटे उसके स्नेह के लिए लालायित रहते थे।

संदर्भ : प्रस्तुत गद्यांश अमर कथा शिल्पी विष्णु प्रभाकर द्वारा रचित आवारा मसीहा उपन्यास से उद्धृत है।

प्रसंग : प्रभाकर जी का मानना है कि गृहस्थी की गाड़ी नर–नारी (पति–पत्नी) के पारस्परिक सहयोग से क्रियाशील रहती है। परस्पर समर्पण से परिवार तथा संबंधों का सफल निर्वाह हो सकता है।

व्याख्या : समाज में गतिशीलता एवं क्रमबद्धता बनाए रखने के लिए परिवार की संरचना आवश्यक है। परिवार की केंद्रीय शक्ति के रूप में पति एवं पत्नी दोनों का होना आवश्यक है। समान दृष्टिकोण एवं विवकेशीलता से पारिवारिक अस्तित्व जीवित रहता है। मोतीलाल एवं भुवन मोहिनी पति–पत्नी, दांपत्य जीवन का सफल निर्वाह कर रहे हैं। मोतीलाल के स्वभाव में अस्थिरता तथा काल्पनिक प्रवृत्ति विद्यमान थी। भुवन मोहिनी आदर्श गृहिणी के रूप में परिवार की संचालिका थी। सीधी एवं सरल स्वभाव के फलस्वरूप परिवार की सर्वप्रिय थी। भुवन मोहिनी के चेहरे से आर्थिक विपन्नता का भाव झलकता था अर्थात् अकिंचन स्थिति ने भुवन मोहिनी को असमय प्रौढ़ बना दिया था।

निस्वार्थ सेवा द्वारा बड़े प्रशंसा करने के लिए बाध्य होते थे वहीं छोटे स्नेहपूर्ण दृष्टि के लिए भुवन मोहिनी पर आश्रित थे।

विशेष :

शरत की पारिवारिक स्थिति का बोध होता है।

मोतीलाल के यथार्थ से पलायन करने की प्रवृत्ति के दर्शन होते हैं।

आर्थिक विपन्नता के फलस्वरूप ही मनुष्य स्वप्नों की दुनिया में विचरण करने को बाध्य होता है।

भुवन मोहिनी का आदर्श गृहिणी स्वरूप स्पष्ट हो गया है।

मनुष्य अकिंचन स्थिति में असमय प्रौढ़ता के निकट पहुँच जाता है।

मोतीलाल की परिवार के प्रति उत्तरदायित्वहीनता प्रदर्शित होती है।

सेवा, त्याग गृहिणी के आवश्यक गुण माने जाते हैं।

काव्यात्मक भाषा प्रयोग में लाई गई है।

उत्प्रेक्षा अलंकार का सुन्दर प्रयोग हुआ है, जैसे–मोतीलाल मानो आकाश में उड़ने वाली रंगीन पतंग थे।

मनुष्य से किसी भी अवस्था में घृणा नहीं करनी चाहिए। जो व्यक्ति खराब दिखाई देते हैं, उन्हें सुधारने की चेष्टा करनी चाहिए। यह बहुत बड़ा काम है। भगवान के इस राज्य में मनुष्य जितना शक्तिशाली है, उतना दुर्बल भी।

संदर्भ : प्रस्तुत गद्यांश विष्णु प्रभाकर द्वारा रचित जीवनी परक उपन्यास आवारा मसीहा उपन्यास से उद्धृत है।

प्रसंग : लेखक का मानना है कि विधाता की इस सृष्टि में सभी मनुष्य समान हैं। सरकार द्वारा ऊंच नीच की भावना व्यक्त किए जाने पर शरत का मानवीय स्वरूप अभिव्यक्त होता है।

व्याख्या : शरत ने सहृदय युक्त जीवन जिया। किसी के दुःख–दर्द को देखकर शरत की आत्मा कराह उठती है। वह पीड़ितों की सेवा करने से आनंदित होता है। शरत का मानना था कि मनुष्यता की पहचान निर्धनता या धनाढ्यता की अपेक्षा नहीं करती, अपितु प्राणी मात्र ही केंद्रीय होता है। सभी एक ही ईश्वर की संतान हैं। ईश्वर की सृष्टि में न कोई छोटा है और न कोई बड़ा। मनुष्य अपने कर्मों से महान बनता है। ऊंच–नीच की भावना व्यक्ति की संकीर्ण विचारधारा का बोध कराती है। मनुष्य से स्नेह, प्रेम की आकांक्षा रखनी चाहिए। शरत की दृष्टि में मनुष्य द्वारा कोई भी अनुचित कार्य करने पर परिस्थितियाँ मुख्य रूप से उत्तरदायी होती हैं। परिस्थितिवश निष्कृष्ट कार्य करने को मनुष्य बाध्य होता है। मनुष्य पर व्यंग्य करने की अपेक्षा उसे सुधारने का प्रयत्न करना चाहिए। यह कार्य अपेक्षित मन एवं कर्म की एकाग्रता पर निर्भर करता है। ईश्वर के इस संसार में विविधता अनिवार्य रूप से देखने को मिलती है। एक व्यक्ति एक समय में महान एवं शक्ति सामर्थ्य का पुंज होता है वही परिस्थितिवश दुर्बल भी हो जाता है।

विशेष :

शरत के जीवन का परोपकारी स्वरूप स्पष्ट है।

मानवतावादी भावना का चित्रण किया गया है।

मानव महिमा का गुणगान सभी धर्म ग्रंथ करते हैं।

परिस्थितियों के द्वारा ही मनुष्य श्रेष्ठ और निकृष्ट बन जाता है।

सुधारवादी प्रवृत्ति का बोध दृष्टव्य है।

शरत की चारित्रिक विशेषता परिलक्षित होती है।

शरत का संवेदनात्मक स्वरूप स्पष्ट है।

वे रूढ़ियों और कुरीतियों, अंधपरंपराओं और मूढ़ विश्वासों के विरोधी थे, धर्म की मूल स्थापनाओं के नारी। समाज के ही निषेधों के कारण सती न रहने पर भी वे यह नहीं मानते थे, कि यह असली नारी नारी भी नहीं रही। यह संकीर्ण भेद बुद्धि भी उन्होंने त्यागी थी, क्योंकि इससे मनुष्य धर्म का अपमान होता है। वह मानते थे, जब परिस्थितियों से विवश होकर मनुष्य ऐसा कुछ कर बैठता है, जो तत्कालीन धर्म एवं समाज की दृष्टि से बुरा हो, तो मनुष्य सचमुच बुरा नहीं हो जाता है।

संदर्भ : प्रस्तुत गद्यांश श्री विष्णु प्रभाकर द्वारा रचित 'आवारा मसीहा' से उद्धृत है।

प्रसंग : यह अवतरण शरत के वैयक्तिक जीवन पर प्रकाश डालता है। इसमें शरत की विवेकशीलता तथा तटस्थ भाव पर प्रकाश डालते हुए एक ज्योतिषी अपने विचार व्यक्त करता हुआ कहता है –

व्याख्या : शरत की बहुमुखी प्रतिभा से ज्योतिषी भी अछूता न रहा। उन्होंने अपनी विवकेशीलता से स्वस्थ समाज की संरचना के लिए रूढ़ियों के परित्याग पर बल दिया, कुरीतियों का डटकर विरोध भी किया। अंधविश्वास और मूढ़ विश्वासों के दुष्परिणामों से समाज को अवगत कराकर परोपकारी भावना का परिचय दिया। उनका मानना था कि कुरीतियों, कुप्रथाओं से युक्त समाज में विकास की प्रक्रिया नहीं पनप सकती। धर्म की आड़ में मनुष्य स्वच्छंद न हो, ऐसी कामना की। समाज के दुष्परिणामों के फलस्वरूप ही नारी नारियों की तरह जीवन व्यतीत न कर परित्यक्ता का जीवन जीने को बाध्य हैं। नारी की उपेक्षा करना किसी धर्म का अंग नहीं है। संकीर्ण विचारधारा को छोड़ने से ही मानवतावादी भावना का विकास किया जा सकता है। मनुष्य का धर्म मनुष्य के हित की कामना करना है, अगर कोई मनुष्य अपने धर्म का सफल निर्वाह नहीं करता तो मनुष्य कहलाने का हकदार भी नहीं है क्योंकि मनुष्यता मानव व्यवहार पर आश्रित होती है। उन्होंने मनुष्य के समाज के विपरीत आचरण करने की प्रक्रिया में परिस्थितियों की भूमिका को सर्वोपरि माना है क्योंकि मनुष्य स्वयं न चाहते हुए भी अनुचित कार्य करने को विवश होता है। उनका मानना था कि मनुष्य कभी भी बुरा नहीं होता। उसके द्वारा किया गया कार्य ही उसका मूल कारण होता है। मनुष्य के अच्छे–बुरे की पहचान उसके कार्य से ही होती है।

विशेष :

शरत की विवेकशीलता का चित्रण किया गया है।

शरत की बहुमुखी प्रतिभा से आकृष्ट होकर ही ज्योतिषी प्रशंसा करने को बाध्य हुआ।

स्वस्थ समाज की संरचना के लिए अंधविश्वास, कुप्रथाओं एवं रूढ़ियों का परित्याग करना आवश्यक है।

शरत की मानवतावादी भावना का वर्णन है।

परिस्थितियों के प्रभाव से मनुष्य का बचना दुष्कर होता है।

मानव जन्म, पूर्व जन्म की तपस्या का प्रतिफल है।

सती प्रथा का प्रचलन समाज की संकीर्णता एवं धार्मिक अंधविश्वास का बोध कराती है।

शरत का मानना था कि मनुष्य में सुधार उसके कार्यों का बोध कराकर किया जा सकता है, मनुष्य के बहिष्कार द्वारा नहीं।

जिस चेष्टा में, जिस आयोजन में देश की नारियाँ सम्मिलित नहीं हैं, उनकी सहानुभूति नहीं है, उस सत्य की उपलब्धि करने का कोई ज्ञान, कोई शिक्षा, कोई साहस आज तक जिनको हमने नहीं दिया, उनको केवल घर के घेरे के भीतर बिठाकर, केवल चरखा कातने के लिए बाध्य करके ही कोई बड़ी वस्तु नहीं प्राप्त की जा सकेगी। औरतों को हमने केवल औरत बनाकर नहीं रखा है। मनुष्य नहीं बनने दिया, उसका प्रायश्चित स्वराज्य के पहले देश को करना ही चाहिए।

संदर्भ : प्रस्तुत गद्यावतरण विष्णु प्रभाकर की प्रसिद्ध रचना आवारा मसीहा से उद्धृत है।

प्रसंग : स्वतंत्रता आंदोलन की सार्थकता नारी के सहयोग के बिना पूर्ण नहीं मानी जाती, क्योंकि समाज का महत्त्वपूर्ण अंग होने के नाते उसकी उपेक्षा करना संभव नहीं है। नारी की सहभागिता पर प्रकाश डालते हुए शरत ने कहा –

व्याख्या : शरत का मानना था, संसार के सभी प्रयोजन नारी के बिना पूर्ण नहीं हो सकते, भले ही वह आयोजन हो या फिर व्यक्ति की वैयक्तिक चेष्टा हो क्योंकि नारी परिवार, समाज, देश की मुख्य संचालिका रही है। नारी को सहानुभूति प्रदान कर पंगु बनाना लक्ष्य नहीं है, अपितु पुरुष के साथ समानाधिकार दिलाने की आवश्यकता है। सत्य की पूर्णता नारी के सान्निध्य से ही संभव है। शरत नारी के प्रति पुरुष की उदासीनता का वर्णन करते हुए कहते हैं कि शिक्षा से वंचित कर पुरुष ने अपनी संकुचित दृष्टि बोध का परिचय दिया है। उसको घर की चार दीवारी के बीच कैद कर उसकी इच्छाओं का दमन कर दिया गया है। संसार के बड़े लक्ष्य की सिद्धि के लिए नारी की उपेक्षा सही नहीं है। नारी भी पुरुष के समान स्वतंत्रता की आकांक्षी है उसे भी स्वतंत्र निर्णय लेने का अधिकार है। हमें औरत और स्त्री के बीच भेदक रेखा समाप्त करनी होगी, तभी हम राष्ट्रीय स्तर की समस्याओं को हल कर सकते हैं। स्वतंत्रता आंदोलन में नारी के योगदान को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता। मनुष्य ने नारियों पर जो अत्याचार किए हैं, उन्हें अधिकारों से वंचित रखा है, निर्णय की क्षमता से कोसों दूर रखा है, इनका समाधान करने के लिए मनुष्य को प्रायश्चित करना पड़ेगा। स्वराज्य जैसे विशाल लक्ष्य की सिद्धि को तभी हम प्राप्त कर सकते हैं, अन्यथा नहीं।

विशेष :

शरत की भविष्योन्मुखी जीवन दृष्टि का वर्णन है।

स्वतंत्रता संग्राम में नारियों की उपेक्षा की ओर संकेत किया गया है।

नारी स्वतंत्रता एवं समानाधिकार तक सीमित रखने में मनुष्यों की पुरुषसत्तात्मक प्रणाली का उल्लेख है।

शरत की मानवतावादी भावना का वर्णन है।

शरत के विचारों में आधुनिकता के दर्शन होते हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति चरखे से संभव नहीं है।

शरत की संवेदनात्मक दृष्टि ने नारी जीवन को सार्थक बना दिया।

शरत का मानना है कि ईश्वर प्रदत्तत समाज में नर–नारी समानता के पक्षपाती हैं, स्वस्थ समाज व राष्ट्र की संरचना नर–नारी के परस्पर समर्पण व त्याग का ही प्रतिफल है।

मैं चाहता हूँ कि हमारे देश के जवान लड़के–लड़कियों को साहित्य में रस हो, तो वे भले ही दुनिया की दूसरी भाषा की तरह अंग्रेजी भी जी भरकर पढ़ें। फिर मैं उनसे आशा रखूंगा कि वे अपने अंग्रेजी पढ़ने के लाभ डॉक्टर बोस, राय और कवि सम्राट की तरह हिंदुस्तान को और दुनिया को दें। लेकिन मुझसे यह नहीं बर्दाश्त होगा कि हिंदुस्तान का एक भी आदमी मातृभाषा को भूल जाए, उसकी हंसी उड़ाए, या उससे शर्माए या उसे यह भी लगे कि वह अपने अच्छे से अच्छे विचार अपनी भाषा में नहीं रख सकता।

संदर्भ : प्रस्तुत गद्यावरण अमर कथा शिल्पी 'विष्णु प्रभाकर' द्वारा रचित 'आवारा मसीहा' से उद्धृत है।

प्रसंग : भाषा और साहित्य की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए महात्मा जी ने कहा –

व्याख्या : मनुष्य जन्मजात स्वतंत्र पैदा हुआ है। मनुष्य ने निजी स्वार्थ हित मनुष्य को बंधन में जकड़कर उसकी आजादी को पंगु बना दिया है। साहित्य की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए महात्मा जी ने कहा कि साहत्यि का संबंध मनुष्य के वैयक्तिक जीवन की घनिष्ठता का बोधक है। भविष्योन्मुखी दिशा निर्देश के लिए साहित्य का अध्ययन अपेक्षित है। उनका मानना है कि अन्य भाषा का अध्ययन साहित्यिक दृष्टि से सार्थक है जिससे मातृभाषा की गरिमा भी कलुषित न होने पाए। महात्मा जी के अनुसार भले ही हम अंग्रेजी या अन्य भाषा के अध्ययन से डॉक्टर, इंजीनियर, विश्व कवि, कवियों के शिरोमणि का पद प्राप्त कर लें लेकिन मातृभाषा की उपयोगिता को नकारा नहीं जा सकता। विचारों की अभिव्यक्ति के लिए मातृभाषा से बेहतर विकल्प क्या हो सकता है। मनुष्य को यह अधिकार नहीं है कि वह अपनी मातृभाषा की निंदा करे, उसका उपहास करे या मातृभाषा के बोलने में शर्म या संकोच की भावना हृदय में धारण करे।

विशेष :

मातृभाषा की उपयोगिता पर प्रकाश डाला गया है।

साहित्य मनुष्य के लिए दिशा निर्देश प्रदान करता है।

मातृभाषा ही अभिव्यक्ति का श्रेष्ठ माध्यम हो सकती है।

विदेशी भाषा के अध्ययन से महत्त्वपूर्ण पदों को प्राप्त तो किया जा सकता है, लेकिन देश, समाज के प्रति आत्मीयता प्रदर्शित होना संभव नहीं है।

मातृभाषा के महत्त्व पर भारतेंदु हरिशचंद्र के विचार भी देखे जा सकते हैं –

'निजभाषा उन्नति सवै, उन्नति का मूल

बिन निज भाषा ज्ञान के मिटे न हिय का शूल'।

मातृभाषा और स्वदेश प्रेम अन्योन्याश्रित हैं।

स्वदेश प्रेम की भावना का सशक्त माध्यम मातृभाषा से श्रेष्ठ दूसरा नहीं हो सकता।

महात्मा जी की देश के प्रति समर्पण की भावना व्यक्त है।

स्त्री जाति के प्रति जो अन्याय, निष्ठुर सामाजिक विचार अरसे से चला आ रहा है उसका प्रतिविधान

कीजिए। फिर उधर की संख्या के लिए आपको चिंतित होना नहीं पड़ेगा।

संदर्भ : प्रस्तुत गद्यांश विष्णु प्रभाकर द्वारा रचित अमर रचना 'आवारा मसीहा' से उद्धृत है।

प्रसंग : राजनैतिक अस्थिरता का दौर शिथिल हो चुका था। सविनय अवज्ञा आंदोलन की रफ्तार भी मंद पड़ गई थी। बंगाल समझौता से सांप्रदायिक भावना समाप्त हो चुकी थी। पारस्परिक मेल जोल का माहौल पैदा होने लगा था, इस प्रतिक्रिया की पृष्ठभूमि में देशबंधु के विचारों का आदान–प्रदान हो रहा था। देशबंधु अप्रत्याशित जनसंख्या वृद्धि से चिंतित होकर शरत से हिंदू मुस्लिम एकता का समर्थन करने को कहते हैं।

व्याख्या : शरत के विचारानुसार जनसंख्या वृद्धि से समस्या का समाधान निकलना असंभव नहीं है। शरत का मानना था कि जनसंख्या वृद्धि के बारे में विचारों का आदान–प्रदान करने की अपेक्षा मनुष्यों के दृष्टिकोण और योजना नीति का महत्त्व अधिक है, क्योंकि दूरगामी परिणामों को भविष्योन्मुखी दृष्टिकोण से ही हल किया जा सकता है। शरत का मानना था कि राष्ट्रीय स्तर के प्रश्नों का समाधान एकता समानता द्वारा ही संभव है। भारतीय समाज में सदियों से जो वर्ग पीड़ित है, उपेक्षित तथा त्रस्त है उसको समान अधिकार के द्वारा ही बराबर लाया जा सकता है। ये भी मनुष्य हैं इनमें भी वही आत्मा और खून है जो हममें और तुममें है। हमें अपनी सोच बदलनी होगी। जिस नारी को परिवार समाज, राष्ट्र की संचालिका माना जाता है उसे हमने पुरुषों के समान अधिकारों से वंचित रखा है। उन्हें शोषण के द्वारा त्रस्त किया गा है। सामाजिक अंधविश्वासों, परंपराओं की बेड़ियों में जकड़कर रखा है। सबसे पहले हमें पूर्व कर्मनीति का परित्याग करना पड़ेगा। नारी को भी पुरुषों के समान अवसर प्रदान करने होंगे। ऐसा करने से जनसंख्या वृद्धि जैसे प्रश्नों का समाधान स्वतः ही हो जायेगा।

विशेष :

राजनैतिक अस्थिरता के दौर में एकता के प्रयत्न सराहनीय रहे।

देशबंधु उन्मुक्त विचारों के फलस्वरूप लोकप्रिय हो गए थे।

संगठन में शक्ति होती है, राष्ट्रीय, देशप्रेम जैसे मुद्दे स्वतः ही हल हो जाते हैं।

नारियों के प्रति किए गए पक्षपातपूर्ण व्यवहार की ओर संकेत किया गया है।

इतिहास विदित है कि सामाजिक एवं धार्मिक कुप्रथाओं का शिकार नारी को ही बनाया जाता था।

शरत के विचारों में भविष्योन्मुखी जीवन दृष्टि की झलक देखने को मिलती है।

आत्मरक्षा के बहाने मनुष्य का असम्मान करना मुझसे नहीं होता। देखो न, लोग कहते हैं कि मैं पतिताओं का समर्थन करता हूँ। समर्थन मैं नहीं करता केवल उनका अपमान करने को ही मेरा मन नहीं चाहता। मैं कहता हूँ कि वे भी मनुष्य हैं। उन्हें भी फरियाद करने का अधिकार है और महाकाल के दरबार में इसका विचार एक दिन अवश्य होगा। अनेक संस्कारों से अंधे हो रहे लोग इस बात को किसी तरह स्वीकार करना नहीं चाहते। किंतु यह मेरी निहायत व्यक्तिगत बातें हैं, और नहीं कहूंगा।

संदर्भः प्रस्तुत गद्यांश विष्णु प्रभाकर द्वारा रचित अमर रचना 'आवारा मसीहा' से उद्धृत है।

प्रसंग : पथेरदाबी और शेष प्रश्न रचनाओं में व्यक्त शरत के विचारों, भावनाओं, व्यक्त भाषा के बारे में समाज में तरह–तरह की राय कायम होने लगी। शरत का मानना था कि शील स्त्रियों का आभूषण है इसकी रक्षा करना प्रत्येक नारी का धर्म है। पीड़ित स्त्रियों के समर्थन में अपना वक्तव्य व्यक्त करते हुए शरत कहते हैं –

व्याख्या : शरत का मानना है कि इस पृथ्वी पर प्रत्येक प्राणी को स्वेच्छानुसार जीवन जीने का अधिकार प्राप्त है।

उसे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्राप्त है। मनुष्य का सम्मान करना प्राणी मात्र का धर्म है। क्योंकि मनुष्य जीवन पूर्व जन्मों की तपस्या का प्रतिफल होता है। मनुष्य को यह अधिकार नहीं है कि वह अपने वैयक्तिक स्वार्थ के लिए दूसरे मनुष्य को गर्त में गिरा दे। स्वयं की प्राण रक्षा के लिए दूसरे की उपेक्षा करना मानवता विरोधी है। शरत का मानना है कि पतितों की रक्षा करना, उनका समर्थन करना, उनके प्रति संवेदना व्यक्त करना मेरा स्वधर्म है, जीवन का उद्देश्य है। पतित, पीड़ित व्यक्तियों में भी मनुष्यता विद्यमान होती है। उन्हें भी जीवन जीने का अधिकार मिलना चाहिए। उन्हें भी अपनी व्यथा को व्यक्त करने की स्वतंत्रता प्राप्त हो। कूपमंडूक, बुद्धि संपन्न, अंधविश्वासों के संस्कारों में दबे व्यक्ति इनका भले ही पालन न करे लेकिन समय आने पर एक दिन उन्हें पश्चाताप की अग्नि में झुलसना पड़ेगा। मनुष्य की वैयक्तिक विचारधारा समाज को स्वीकार्य हो, यह आवश्यक भी नहीं है।

विशेष :

शरत की रचनाओं में व्यक्त विचार समाज में हलचल उत्पन्न करने में सक्षम है।

शरत की मानवतावादी भावना व्यक्त है।

मनुष्य जीवन पूर्व तपस्या का प्रतिफल है उसे व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिए।

शरत का संवेदनात्मक रूप दृष्टव्य है।

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता से ही मनुष्य स्वतंत्रत का आभास होता है।

अंधविश्वास एवं कुसंस्कार युक्त जीवन विकास के मार्ग में अवरोध उत्पन्न करता है।

शरत की भविष्योन्मुखी विचारधारा की अभिव्यक्ति है।

इस अवतरण में शरत के वैयक्तिक जीवन की छाप दिखाई देती है। स्वयं शरत ने माँ की असहाय स्थिति, विधवाओं की दुर्दशा एवं परित्यक्ता नारियों को निकटता से देखा।

संपूर्ण मनुष्यत्व सतीत्व से बड़ा है। इस बात को मैंने एक दिन कहा था और इसी को अभद्र एवं गंदा बताकर मुझे गाली देने में कुछ उठा नहीं रखा गया। मनुष्य मानों विक्षिप्त हो गया। मैंने अत्यंत सती नारी को चोरी–जुआ खोरी और जालसाजी करते तथा झूठी गवाही देते देखा है। साथ ही इससे उलटी बात देखने का भी सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ है।

संदर्भः प्रस्तुत गद्यांश विष्णु प्रभाकर द्वारा रचित अमर रचना 'आवारा मसीहा' से उद्धृत है।

प्रसंग : नारीत्व और सतीत्व जैसे गुणों की सार्थकता नारी के वैयक्तिक जीवन की ओर संकेत करती है। विधवा नारी से समाज क्या अपेक्षाएँ रखता है? समाज की नारी के प्रति क्या नीति है? इन दोनों में मूलभूत अंतर दिखाई देता है। वैधव्य के बोझ से दबी नारी की सेवा सुश्रुसा को उसका कर्त्तव्य मान लेना संकीर्ण मानसिकता का सूचक है। उसे भी पुनर्विवाह करने की स्वतंत्रता मिले। वह भी समाज में आदर सत्कार की भागीदारी हो। नारी को पुरुष के समानाधिकार की वकालत करते हुए जन्मदिन के उपलक्ष्य में अपने भाषण में शरत ने यही भावना व्यक्त की –

व्याख्या : संसार के सभी धर्म ग्रंथ उपनिषद् व शास्त्रों में मानव महिमा का गुणगान किया गया है। शरत का मानना है कि सतीत्व की अपेक्षा मनुष्यत्व का स्थान सर्वोपरि है। मानवीय गुणों की अभिव्यक्ति मानवता का बोध कराती है। नारी का सतीत्व केवल व्यक्ति विशेष की परिधि तक सीमित रहता है जबकि मानवता की सीमा में संपूर्ण विश्व की परिकल्पना संभव है। सेवा, त्याग, सहानुभूति, जैसे गुणों से समाज की संरचना स्थापित होती है। सतीत्व की अपेक्षा

मनुष्यत्व कहीं अधिक श्रेष्ठ है। मेरी यह विचारधारा भले ही अप्रिय लगे लेकिन यथार्थ से परे नहीं है। सतीत्व नारी में भी उच्छृंखलता देखी जा सकती है। चोरी करना, जूआ खेलना और धोखाधड़ी करना तथा झूठी गवाही देने में सतीत्व नारी भी उतनी ही दोषी है जितना कि मनुष्य। शरत का मानना था कि मानवता के लिए सतीत्व का होना आवश्यक नहीं है। उनकी दृष्टि में चोरी, जूआ, रिश्वत तथा धोखा देना सतीत्व से अधिक घातक है। सच्ची मानवता के दर्शन पतित व्यक्ति तथा विधवा नारी में भी किए जा सकते हैं।

विशेष :

शरत की स्पष्टवादिता को देखा जा सकता है।

सतीत्व सामाजिक दृष्टिकोण से नारी की वैयक्तिक इच्छाओं का दमन करता है।

मानवतावादी भावना के दर्शन होते हैं।

मानवीय गुणों से युक्त मनुष्य ही मनुष्य कहलाने का अधिकारी है।

चोरी करना, जूआ खेलना, धोखा देना और जालसाजी करना आदि सामाजिक कुरीतियों से अवगत कराया है।

शरत की नारी भावना का दिग्दर्शन किया गया है।

साहित्यिक हिंदी प्रयोग में लाई गई है।

आत्मकथात्मक शैली अपनाई गई है।

मैं मानव धर्म को सतीत्व धर्म के बहुत ऊपर स्थान देता हूँ। सतीत्व और नारीत्व दोनों आदर्श समान नहीं है। नारी हृदय की मंगलमयी करुणा, उसकी जन्मजात मातृ वेदना, उसके सतीत्व से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है। बहुत सी स्त्रियाँ मैंने ऐसी देखी हैं, जिनका दूसरे पुरुष से कभी किसी प्रकार का शारीरिक या मानसिक संबंध नहीं रहा, तथापि, उनके स्वभाव में अत्यंत नीचता, घोर संकीर्णता, विद्वेष भावना और चौरवृति पाई गई है। इसके अतिरिक्त ऐसी पतिताओं से मेरा परिचय रहा है जिसके भीतर मैंने मातृ हृदय की निःस्वार्थ ममता और करुणा का अथाह सागर उमड़ता हुआ पाया है।

संदर्भः प्रस्तुत गद्यांश विष्णु प्रभाकर द्वारा रचित अमर रचना 'आवारा मसीहा' से उद्धृत है।

प्रसंग : सतीत्व के विषय पर शरत के विचारों में एकरूपता नहीं मिलती उनका मानना था कि सतीत्व श्रेष्ठता का पैमाना नहीं है और पतित स्थिति नीचता की श्रेणी नहीं है। समयानुकूल इस अवधारणा में परिवर्तन होना स्वाभाविक है। इलाचंद्र जोशी द्वारा भारतीय नारी के सतीत्व आदर्श विषय पर पूछे गए प्रश्न का उत्तर देते हुए शरत ने कहा –

व्याख्या : शरत के विचारानुसार मानव धर्म और सतीत्व एक दूसरे के पूरक होते हुए भी विरोधी हैं। मानवता नारी के सतीत्व से अधिक महत्त्वपूर्ण है। समष्टि का बोध मानवता तथा व्यष्टि का बोध सतीत्व से होता है। मानवता व्यापक परिधि का सूचक है। जबकि सतीत्व निश्चित व्यक्ति विशेष की। करुणा, संवेदना, मातृत्व तथा कल्याणमयी भावना को मानवता के परिप्रेक्ष्य में देखा जा सकता है। चारित्रिक पतन सतीत्व के साथ आदर्श नारी में भी हो सकता है यह परिस्थिति पर निर्भर करता है। संकीर्ण विचारधारा नीचता के कुकृत्य, प्रतिकार की भावना, ईर्ष्या का भाव तथा चोरी करने की प्रवृत्ति जिनका संबंध सामान्यतया पुरुषों से होता है, नारियों में भी पाए जाते हैं। शरत का मानना था कि मातृत्व की स्नेहमयी ममता, करुणा का उमड़ता सागर समाज द्वारा व्यक्त, पतित नारियों के जीवन का अंग बन जाता है।

विशेष :

शरत की मानवतावादी भावना का वर्णन है।

सतीत्व नारी विशेष तक सीमित होता है जबकि मनुष्यता, मानवधर्म अपने विशाल कलेवर में व्यक्ति के साथ समाज, परिवार तथा युगीन बोध को प्रतिबिम्बित करता है।

मातृत्व भावना नारी जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण अंग है।

संतान विहीनता नारी जीवन का अभिशाप माना गया है।

नारी जीवन की सार्थकता मातृत्व के बिना पूर्ण नहीं होती।

सामाजिक कुरीतियों का उल्लेख है।

ममता, करुणा, संवेदना, निस्वार्थ सेवाभाव मानवता के अंग हैं।

साहित्यिक हिंदी प्रयोग में लाई गई है।

विचारात्मक शैली अपनाई गई है।

शरत के जीवन की वास्तविकता का वर्णन है।

पराधीन देश के अधःपतित समाज की असहाय, अंतर्पुर चारिणियों के हृदय की मूक अनंत वेदना को तुमने भाषा में मूर्त कर दिया है। उनके दुर्गतिपूर्ण जीवन के सुख–दुखों की सभी अनुभूतियों को निविड़ सहानुभूति में ढालकर तुमने साहित्य में सत्य करके प्रत्यक्ष कर दिया है। तुम्हारी अनावृत दृष्टि, सूक्ष्म पर्यवेक्षक–सामर्थ्य, सुगम्य उपलब्धि, शक्ति और विचित्र मानव की अतल स्पर्शी अभिज्ञता ने निखिल नारी चित्र की निगूढ़ प्रकृति का गुप्ततम पता पा लिया है। हे नारी के परमरहस्यज्ञाता, हम लोग तुम्हारी वंदना करते हैं।

संदर्भः प्रस्तुत गद्यांश विष्णु प्रभाकर द्वारा रचित अमर रचना 'आवारा मसीहा' से उद्धृत है।

प्रसंग : शरत ने अपने जीवन का प्रारंभ जिस प्रतिकार, अन्याय के विरूद्ध किया, उसका अंततः पालन भी किया। समाज की कुरीतियों को देखकर द्रवित होना स्वाभाविक था। उन्होंने नारी को समानाधिकार दिलाने के लिए राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में भी प्रयत्न किए और पारंगत भी रहे। नारी की दयनीय स्थिति के लिए पुरुष को दोषी ठहराया। अपने मित्र की पत्नी को देखकर शरत की आत्मा कराह उठी, उनकी व्यथा ने नारी जाति के उद्धार का द्वार खोला। नारियों ने उन्हें अपना मसीहा माना। उनका समय–समय पर अभिनंदन भी किया। उनकी 57वीं जयंती के अवसर पर सम्मानित करते हुए बंगाल की नारियों के उद्‌गार इन शब्दों में व्यक्त हुए –

व्याख्या : शरत का जीवन, संघर्ष का पर्याय बन गया था। नारियों के प्रति अन्याय को देखकर द्रवित होने के साथ–साथ प्रयत्नशील भी रहते थे। बंगाल की नारियों ने शरत के जीवन की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहा कि – ''शरत बंगाली समाज में नारियों के लिए पूजायोग्य थे। उनके द्वारा किए गए कार्यों से नारियों में स्वाभिमान का भाव पैदा हुआ। पराधीन भारत में पतित समाज के लिए तन–मन से समर्पित जीवन शरत का ही था। बाल्यावस्था में शवों का क्रियाकर्म करना उनकी निस्वार्थ सेवा भावना को दर्शाता है। जिस प्लेग का नाम सुनकर मनुष्य कोसों दूर भागता था ऐसी स्थिति में शरत के द्वारा शवों का क्रिया–कर्म करना उन्हें महानता की श्रेणी में लाकर खड़ा कर देता है। शरत की सूक्ष्म और पैनी दृष्टि ने सभ्य समाज में व्याप्त नारियों के अत्याचारों को देखा,

उनकी मूक वेदना को अपनी लेखिनी का आश्रय प्रदान कर समाज के समक्ष आदर का पात्र बनाया। पतित एवं त्यक्त, दीन–हीन स्थिति में सहारा प्रदान किया। उनके सुखों–दुःखों को समाज के सामने रखकर सोचने पर विवश किया। शरत की सहानुभूति का सान्निध्य पाकर उनके जीवन में आशा का संचार हुआ। साहित्य के मूल उत्सव के रूप में अमरता प्रदान की। उनकी नारियाँ भले ही युगीन समाज में पीड़ित थीं या पतित लेकिन शरत की लेखिनी ने उन्हें पाठकों की संवेदना तथा सहानुभूति का पात्र बना दिया। शरत की निर्निमेष दृष्टिबोध से जीवन का कोई पक्ष अछूता न रह सका। उन्होंने विवेक, सामर्थ्य तथा गंभीर चिंतन बोध से दिशा निर्देश प्राप्त किया। उन्होंने मानव चरित्र के विविध पहलुओं से अवगत कराया। उनके साहित्य की नारियों ने समस्त संसार की नारियों के लिए मार्ग प्रशस्त किया। वास्तव में शरत जी नारी चरित्र के गूढ़तम रहस्य के निरीक्षक थे। शरत की इन्हीं विशेषताओं के कारण ही वे नारियों के द्वारा पूज्य तो थे ही पथ–प्रदर्शक भी थे।

विशेष :

बंगाली समाज पर शरत का प्रभाव देखा जा सकता है।

यह गद्यावतरण शरत के बहुमुखी व्यक्तित्व का चित्रण करता है।

इस गद्यावरण में शरत की जीवनशैली, दृष्टिबोध एवं संवेदनात्मक पहलू मुखरित होता है।

नारियों के प्रति शरत की भविष्योन्मुखी विचारधारा का परिचय मिलता है।

शरत की लेखिनी ने पतित, परित्यक्त नारियों के लिए सहानुभूति का भाव पैदा किया।

अप्रत्यक्ष रूप से समाज की उन कुरीतियों की ओर संकेत किया है, जिनके कारण नारी जीवन नरकमय था।

शरत की नारी चेतना की भावना का वर्णन है।

शरत का मानना था कि स्वस्थ समाज की संरचना नर–नारी के पारस्परिक सहयोग पर आश्रित है।

शुद्ध साहित्यिक हिंदी का प्रयोग हुआ है।

आत्मकथात्मक शैली अपनाई गई है।

ऐसे मनुष्य के सारे जीवन को लंगड़ा बनाकर मैं सती का खिताब नहीं खरीदना चाहती श्रीकांत बाबू। निश्चय पूर्वक मैं कह सकती हूँ कि हमारे निष्पाप प्रेम की संतान संसार में मनुष्यत्व के लिहाज से किसी से भी हीन न होगी। उसकी माता उसको यह भरोसा अवश्य दे जाएगी, कि वह सत्य के बीच पैदा हुई है। सत्य से बढ़कर सहारा संसार में कुछ नहीं है। इस वस्तु से भ्रष्ट होना उसके लिए कठिन होगा।

संदर्भः प्रस्तुत गद्यांश विष्णु प्रभाकर द्वारा रचित अमर रचना 'आवारा मसीहा' से उद्धृत है।

प्रसंग : शरत की लेखनी का सान्निध्य पाकर नारियों में स्वाभिमान की भावना पैदा होने लगी। उनको चिंतन करने, स्वतंत्र विचार रखने की स्वतंत्रता प्रदान कर आत्मनिर्भर बनाया। विवाह संस्कार की आड़ में पनपती कुरीतियों, भ्रांतियों का निवारण भी किया। उनकी नारियाँ पति का अंधानुकरण नहीं करतीं, अपितु विवेक, सामर्थ्य के अनुसार अपनी उचित राय से अवगत भी कराती हैं। शेष प्रश्न की कमल और श्रीकांत तथा द्वितीय पर्व की अभया आधुनिक नारियों की प्रतीक हैं। उनमें बौद्धिक क्षमता है, प्रेम विवाह पर स्वच्छंद विचार भी रखती हैं। नारी के अदम्य साहस का वर्णन करते हुए लेखक की विचारधारा का उल्लेख निम्नवत् है –

व्याख्या : शरत ने अपनी साहित्यिक रचनाओं से नारियों में स्वाभिमान का भाव पैदा किया। अभया इसका प्रत्यक्ष

उदाहरण है। अभया की दृष्टि में नारीत्व और सतीत्व दो भिन्न पहलू हैं। वैवाहिक जीवन की सफलता का आधार पति–पत्नी की प्रसन्नता पर निर्भर करता है। पुरुष की स्वार्थी प्रवृत्ति का उल्लेख करती हुई अभया कहती है कि पुरुष प्रत्येक तथ्य में अपना ही स्वार्थ देखता है। अग्नि को साक्षी मानकर लिए गए सात फेरे भी क्षणमात्र में तोड़कर अपने स्वार्थ की पूर्ति करने में पीछे नहीं रहता। शारीरिक उत्पीड़न करने में भी उसे हिचक का अनुभव नहीं होता। वह अपने प्रेम को परिपक्व करने के लिए ऐसे स्वार्थी पति का त्यागकर रोहिणी बाबू का वरण करती है जो मानसिक दृष्टि से स्वस्थ है। जीवन पर्यंत पति की इच्छाओं पर खरा उतरना तथा स्वयं को असहाय बनाकर जीना व्यर्थ लगता है। वह उस सतीत्व को त्यागने में भलाई समझती है। श्रीकांत बाबू को सोचने पर विवश करती है कि निर्णय का अधिकार पुरुष के साथ नारियों को भी प्राप्त है। वह अपने प्रेम को पल्लवित कर अपने बच्चों के प्रति निश्चिंत है, क्योंकि उनके बच्चे किसी पर निर्भर नहीं हैं। सत्य संसार की सबसे बड़ी तपस्या है जिस पर चलकर विचलित होना कायरों का काम है।

विशेष :

नारी जागृति का दिग्दर्शन किया गया है।

यह यथार्थ है कि वैवाहिक जीवन पति पत्नी के पारस्परिक सहयोग पर आश्रित है।

अभया में आधुनिक नारी की झांकी देखी जा सकती है।

सतीत्व से प्रेम को अधिक महत्त्व प्रदान कर आधुनिक बोध का भाव पैदा किया गया है।

अभया के द्वारा आत्मनिर्भर नारी का वर्णन किया गया है।

सत्य बोलना प्राणिमात्र का धर्म है। संसार के सभी धर्म सत्य पर बल देते हैं।

सुधारक कबीरदास भी सत्य पर बल देते हैं– 'सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।'

आत्मकथात्मक शैली अपनाई गई है।

उर्दू शब्दों का प्रयोग हुआ है, जैसे लिहाज, खिताब आदि।

भाषा साहित्यिक हिंदी है।

ऐसा निःस्वार्थ ऐसा उदार, ऐसा युक्त मनुष्य अब से पहले उन्होंने कहाँ देखा था। उनकी उसी अगाध भक्ति के कारण तो वे उन्हें जान सके और उनके प्रति होने वाले अन्याय के विरूद्ध संघर्ष कर सके, उन्हें मनुष्य की मर्यादा दिला सके। यह मर्यादा दिलाने के लिए ही उन्होंने मूक नारी को स्वर दिया, और पतिता के अंतर में छिपे मनुष्य को खोजा। लेकिन इतना सब कुछ करने पर भी क्या वे अपने मन की आदर्श नारी (राजलक्ष्मी) को अपने जीवन में पा सके। यह न पाना ही उनके साहित्य की शक्ति है।

संदर्भः प्रस्तुत गद्यांश विष्णु प्रभाकर द्वारा रचित अमर रचना 'आवारा मसीहा' से उद्धृत है।

प्रसंग : सहृदयशील व्यक्तित्त्व के कारण शरत का चिंतित होना स्वाभाविक था। वे नारियों के प्रति संवेदनात्मक दृष्टिकोण अपनाते थे। नारियों को शरत के रूप में मसीहा मिल गया था। उनकी रचनाओं में पतितों, पीड़ितों के लिए दिशा निर्देश मिलते हैं। शरत की उसी उदार भावना पर प्रकाश डालते हुए लीा रानी के हृदयोदगार इन शब्दों में व्यक्त हुए –

व्याख्या : आर्थिक विपन्नता के प्रांगण में पले बढ़े शरत के हृदय का द्रवित होना स्वाभाविक था। उपेक्षित वर्ग की आह को सुनकर शरत का हृदय व्यथित हो जाता, वह उसे दूर करने का प्रयत्न भी करता। शरत के उदार हृदय की भावना के फलस्वरूप नारियों ने उन्हें अपने हितैषी के रूप में स्वीकार किया। शरत का मानना था, कि जो नारी परिवार, समाज की संचालिका है उसकी यह दुर्दशा युगीन परिवेश की जीवन शैली को दर्शाती है। युगीन नारियों ने शरत से प्रेरणा लेकर जीवन को व्यवस्थित स्वरूप प्रदान किया। अन्याय के विरूद्ध संघर्ष करने की शक्ति प्राप्त की। नारियों को भी पुरुषों के समान अधिकार दिलाने का प्रयत्न किया। अत्याचारों, कुरीतियों की शिकार नारी को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्रदान की। पतित नारियों में आत्म–सम्मान की भावना पैदा की। स्वयं नारियों के मसीहा होने पर भी आत्मा से स्वीकार की राजलक्ष्मी को सामाजिक मान्यता दिलाने के लिए जीवन पर्यंत संघर्ष करना पड़ा। उनकी यही वेदना साहित्य सृजन का मूल कारण बनी जिसका प्रतिफल श्रेष्ठ साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से समय–समय पर उनकी लेखनी से पाठक के समक्ष आता रहा। उनकी नारियों ने शरत को भविष्योन्मुखी जीवन दृष्टि प्रदान की।

विशेष :

शरत के बहुमुखी व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला गया है।

शरत के आंतरिक पक्ष पर प्रकाश डाला गया है।

नारी के प्रति सहानुभूति व्यक्त की गई है।

शरत के हृदय की वेदना की अभिव्यक्ति की गई है।

साहित्य सृजन के मूल में नारी वर्ग का चित्रण है।

साहित्य का जन्म अभावों, वेदना के फलस्वरूप होता है।

शरत साहित्य ने नारियों को स्वाभिमानी एवं आत्मनिर्भर बनाया।

शरत का मानवतावादी पक्ष मुखरित हुआ है।

साहित्यिक हिंदी भाषा का प्रयोग हुआ है।

छायावादी कवि सुमित्रा नंदन पंत ने भी साहित्य के मूल में वेदना को चित्रित किया है – यथा –

वियोगी होगा पहला कवि आह से उपजा होगा गान

निकलकर नयनों से चुपचाप बही होगी कविता अनजान।

आत्मकथात्मक शैली अपनाई गई है।

जिसे आप हिंदू धर्म कहते हैं उसी पर हमें पंगु और जड़ बनाने की सबसे अधिक जिम्मेदारी है। इस्लाम में मनुष्यता का कहीं अधिक आदर है। ईसाईयत में उससे भी कहीं अधिक है। मेरी कृतियों में मेरे पात्र बोलते हैं। उनमें से किसी के वक्तव्य में मेरा वक्तव्य नहीं आता। मैं उन बातों को न तो मानता हूँ और न मान सकता हूँ। मेरे निकट जीवन ही सब कुछ है।

संदर्भ : प्रस्तुत गद्यांश विष्णु प्रभाकर द्वारा रचित अमर रचना 'आवारा मसीहा' से उद्धृत है।

प्रसंग : समाज में व्याप्त धार्मिक विकृतियों, सामाजिक रूढ़ियों, अंधविश्वासों, आर्थिक विपन्नताओं एवं अंधानुकरण की

प्रवृत्तियों से शरत का जीवन दुखी होने लगा। धर्म का कार्य मनुष्य के व्यवहार एवं आचरण पर प्रतिबंध लगाकर मानवता को प्रबल बनाना है। धार्मिक विसंगतियों पर अपने विचार व्यक्त करते हुए शरत ने कहा –

व्याख्या : शरत का मानना है कि मानवता की रक्षा करना प्राणी मात्र का धर्म है। सत्य व्यवहार एवं आचरण की शुद्धता व्यक्ति की धार्मिक मान्यताओं को स्पष्ट करती है। धार्मिक असमानताओं ने शरत को मार्क्सवादी भावना के निकट लाकर खड़ा कर दिया, फलस्वरूप धर्म को न मानकर व्यक्ति को प्रमुखता देना शरत की उसी विचारधारा का पोषक है। धर्मों के बाह्य एवं आंतरिक पक्ष पर प्रकाश डालते हुए शरत ने कहा, कि हिंदू धर्म को सर्वोपरि माना जाता है, लेकिन समाज को पतन के गर्त में हिंदू धर्म ने ही अधिक धकेला है। छूआछूत, सतीप्रथा, बाल विवाह जैसी कुप्रथाओं ने मनुष्य जीवन को नरकमय बना दिया है। मनुष्य को असहाय एवं लाचार बनाने में हिंदू धर्म ने पहल की है। इस्लाम धर्म की दुहाई देकर शरत कहता है कि समानता, बराबरी का अधिकार दिलाने में इस्लमा धर्म ने अग्रणी भूमिका निभाई है। नारियों के प्रति संवेदनात्मक पहल को इस्लाम धर्म ने ही प्रारंभ किया। ईसाई धर्म की शिक्षाएँ इस्लाम से मिलने के कारण समानता की हकदार रहीं, लेकिन स्वेच्छाचारिता के फलस्वरूप ईसाई धर्म इस्लाम से आगे निकल गया। शरत ने अपनी रचनाओं में उन्हीं पात्रों का चयन किया जिन्हें निकट से देखा। उनके पात्र उनकी हृदय की आवाज थे। शरत के स्वभावानुकूल आचरण करने के लिए कृतसंकल्प रहते हैं। पात्रों की विशेषताओं में तटस्थ स्थिति का परिचय मिलता है। शरत की दृष्टि में मानव जीवन ही सर्वोपरि है जिसमें विद्रूपताओं, विषमताओं के साथ मानवता, मनुष्यता, सहृदयशीलता के दर्शन भी होते हैं।

विशेष :

शरत की प्रत्युत्पन्नमति का वर्णन है।

यह यथार्थ है कि अस्पृश्यता, वर्गीय भावना का वर्चस्व हिंदू धर्म में अधिक देखने को मिलता है।

शरत की दृष्टि ने हिंदू धर्म की विकृतियों को खोज निकाला, समाज के सामने रखा, बुद्धिजीवियों को चिंतन के लिए विवश किया।

समानता, मानवीय भावना का चित्रण इस्लाम धर्म के मूल उत्स को रेखांकित करता है।

शरत की पात्र योजना यथार्थ पृष्ठभूमि पर आधारित है।

शरत ने पात्र चयन के लिए प्रत्यक्ष दर्शन एवं यथार्थ अनुभवों को प्रमुखता दी।

शरत का मानना है कि रचनाओं में कुरीतियों, कुप्रथाओं का होना स्वाभाविक है, इसी दल–दल में स्वस्थ समाज का निर्माण भी संभव है।

शरत की बेबाक राय का दिग्दर्शन है।

साहित्यिक हिंद भाषा का प्रयोग हुआ है।

आत्मकथात्मक शैली अपनाई गई है।

साहित्य का मूल है साहित से, अर्थात् सबके सहित सहानुभूति रखना आवश्यक है। घर बैठ आराम कुर्सी पर पड़े रहकर साहित्य सृष्टि नहीं होती। हाँ नकल की जा सकती है। साहित्यकार यदि मानव को न देखे तो साहित्य नहीं होता। ये लोग करते क्या हैं, कि पुस्तक के किसी एक कैरेक्टर को लेकर उसी में कुछ रद्दोबदल कर नवीन कैरेक्टर की सृष्टि कर डालते हैं। मानव क्या है, यह मानव को देखे बिना नहीं समझा जा सकता। अत्यंत कुत्सित गंदगी के भीतर भी मैंने मानवता देखी है, कि उसकी कल्पना नहीं की जा सकती।

संदर्भः प्रस्तुत गद्यांश विष्णु प्रभाकर द्वारा रचित अमर रचना 'आवारा मसीहा' से उद्धृत है।

प्रसंग : प्रवर्तक संघ शरत के साहित्यिक जीवन पर प्रकाश डालने का प्रयत्न करता है। शरत से पूछा जाता है कि आप साहित्यकार कैसे बने? तो शरत के मुख से निकले उद्गारों में निश्छलता, सत्यता की झलक दिखाई देती है। स्वयं जीविकोपार्जन के लिए, पेट की भूख को शांत करने के लिए साहित्यकार बना हूँ। अपने इन्हीं विचारों को स्पष्ट करते हुए कहते हैं –

व्याख्या : शरत का मानना है कि साहित्य के लिए मंगलकारी कल्याणमयी भावना का होना आवश्यक है। साहित्य हित की भावना को दर्शाता है। इस हित में वर्ग विशेष व धर्म की अनिवार्यता का लेशमात्र भी वर्णन नहीं होता। मानवता प्रमुख होती है। मनुष्य सर्वोपरि होता है। मनुष्य वही है जो दूसरों के लिए समर्पित हो, प्रतिकार का नामोनिशान न हो। श्रेष्ठ साहित्य के लिए चयनित विषय के साथ तादात्म्य का होना आवश्यक है। अंधानुकरण से नकल तो की जा सकती है, नवीन मौलिक उद्भावनाओं का होना संभव नहीं। किसी पात्र विशेष के समानांतर पात्र सृजन के लिए रागात्मक बोध का होना आवश्यक है। पात्रों के निर्माण में बदलाव की स्थिति से नूतनता, सर्वग्राह्यता को प्राप्त नहीं किया जा सकता। मानव के प्रत्यक्ष दर्शन के बिना मानवता को नहीं देखा जा सकता। आदर्श पात्र का जन्म अभिजात्य वर्ग की अपेक्षा नहीं करता, अपितु घृणित, कुत्सित एवं पतित वर्ग से भी मौलिक पात्र स्वतः जन्म लेते हैं जो सर्वग्राह्य ही नहीं भविष्य के लिए आदर्श भी बन जाते हैं। पाठक उसके साथ तादात्म्य स्थापित करने में गौरवान्वित होता है। शरत का मानना है कि बुराई मनुष्य में नहीं होती, उसके व्यवहार, आचरण एवं दृष्टिकोण में निहित होती है।

विशेष :

साहित्य की परिभाषा दी गई है। भामह ने भी ऐसे विचारों को व्यक्त किया है– 'शब्दार्थौ सहितो काव्यम्'।

'हित' से आशय हितकारी भावना से है जिससे मानव कल्याण हो।

यह यथार्थ है कि श्रेष्ठ साहित्य के मूल में वेदना, दुख महती भूमिका निभाता है।

रचना की लोकप्रियता एवं सर्वग्राह्यता लेखक की विषय के प्रति रागात्मक तादात्म्य को रेखांकित करती है।

साहित्य का मूल उत्स मानवता की प्रतिष्ठा करना है।

नकल की प्रवृत्ति से पुनरावृत्ति तो की जा सकती है लेकिन यथार्थता, सर्वग्राह्यता को पैदा करना असंभव है।

मानवता वर्ग विशेष की अपेक्षा नहीं रखती।

इन्हीं अभावों के फलस्वरूप छायावादी कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के रूप में सामने आए। सरोज केवल उनकी पुत्री नहीं है, अपितु संपूर्ण साहित्य जगत की पुत्री है।

साहित्यिक हिंदी का प्रयोग हुआ है।

आत्मकथात्मक शैली अपनाई गई है।

मानवतावादी भावना का चित्रण किया गया है।

'अपनी प्रगति जांचिए'

1. शरत की लेखनी का सान्निध्य पाकर नारियों में किस प्रकार की भावना पैदा हुई?

2. अभया के द्वारा किस प्रकार की नारी की कल्पना की गई?

3. शरत सामाजिक दुष्परिणामों के लिये किसको जिम्मेदार ठहराता है?

3.3 आवारा मसीहा : सार

आवारा मसीहा उपन्यास की कथा 3 पर्वों प्रथम 'दिशा हारा', द्वितय 'दिशा की खोज' तथा तृतीय 'दिशांत' में विभक्त है। उपन्यास में शरत चंद का जीवन प्रतिबिम्बित होता है। प्रथम पर्व में शरत चंद्र की वैयक्तिक जीवनी का वर्णन है– शरत चंद के पिता मोती लाल यायावर प्रकृति के व्यक्ति थे। आर्थक स्थिति की विषमता ने जहाँ पति पत्नी के बीच आपसी मतभेद को पैदा किया वहीं ससुराल जाकर भागलपुर में घर जमाई बनने के लिए बाध्य कर दिया। अभावों ने शरतचंद के निर्मल हृदय को द्रवित कर दिया जिससे आत्मचिंतन का बोध पैदा हो गया। ननिहाल में मामा मामियों और ममेरे भाइयों के बीच शरत का हृदय शरारत से बाज न आता। बड़े मामा के कड़े अनुशासन के बीच हंसी–ठिठोली का अवसर निकालने में शरत चालाक था। पतंग उड़ाना, गुल्ली–डंडा खेलना, लट्टू घुमाना आदि खेलों के प्रति रूझान अधिक था। आम चुराने पर पकड़े जाने पर साहसी प्रवृत्ति का परिचय देना शरत चंद का स्वभाव था। उन्मुक्त स्वभाव के शरत को ननिहाल में साथ मिला राजू का, जिसने संगीत की महफिल को ऊंचाई तक पहुंचा दिया। शरत में संगीत की धुन थी वहीं राजू अभिनय की कला में दक्ष था। शरत की बालपन की शिकायतों से माँ का दुःखी होना स्वाभाविक था, किंतु दादी का स्नेह शरत में आशा की किरण लेकर आता। एक दिन यह बड़ा आदमी बनेगा का आर्शीवाद शरत को कुछ न कुछ करने के लिए प्रेरित करता था। धीरू का स्नेह पाकर शरत शरारत करने से पीछे न रहता। शरत नयन माँ का साथ पाकर साहसी कार्यों में भी पारंगत हो गया। स्थान परिवर्तन के प्रभाव से शरत के जीवन में स्वच्छंदता बढ़ती गई। गल्प गठकर कहने की कला से शरत के जीवन में दृढ़ता का गुण समाहित हो गया। नीरू दीदी के व्यक्तित्त्व से प्रभावित होकर शरत चंद ने सेवा करने की प्रेरणा गहण की। मना करने पर भी छिपकर दीदी के पास जाना दिनचर्या थी। मृत्युंजय से साँप पकड़ना, जहर उतारने का मंत्र सीख लिया। संवेदना एवं दीनता ने शरत चंद की अभिव्यक्ति का द्वार खोला। विद्यार्थी जीवन में नीला का सान्निध्य शरत के जीवन में विनोद प्रियता के गुण लाया। राजू का साथ पाकर पीड़ितों की रक्षा करना, अनीति का सामना करने का साहस शरत चंद्र ने ग्रहण किया। राजनैतिक परिवेश में उथल–पुथल थी। सुधारकों, देशभक्तों के क्रिया–कलापों का सजीव चित्रण मिला। साहित्यिक क्षेत्र में बंकिम चंद्र चटर्जी के आनंदमठ ने प्रेरणा प्रदान की। राजा राम मोहन राय ने धर्म संस्कार का दायित्व समझाया। पंडित ईश्वर चंद विद्यासागर ने विधवा विवाह का समर्थन कर समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने का प्रयत्न किया। नवजागरण के समर्थकों को सामाजिक आघात भी सहने पड़ते हैं। समुद्र यात्रा को अशुभ माना जाता था। युगीन परिवेश ने अभिनय के द्वार खोले। मृणालिनी का अभिनय शरत ने किया था। देवी आपदा के समय रोगियों की सेवा मुख्य दायित्व था। समाज के त्याज्य वर्ग में शरत ने मानवता के दर्शन किये। स्वयं अनुभव किया कि दरचरिता के हृदय में भी दया–ममता निहित होती है। समाज की दलित, दूषित स्त्रियाँ उनकी लेखन की प्रेरणाश्रोत रहीं। असफल प्रेम के परिजात ने शरत के सृष्टा बनने का मार्ग प्रशस्त किया। गृह त्यागने पर यायावर प्रवृत्ति ने शरत को संन्यासी जीवन बिताने के लिए बाध्य किया। वेश्याओं, साधु, जमींदार, कारकुन, वकील, संगीत तथा निचले तबके ने गहन अध्ययन को प्रेरित किया। माँ–बाप की मृत्यु के बाद दायित्व स्वरूप हिंदी की अर्जियों का अंग्रेजी में अनुवाद करने का कार्य किया। नाना के घर प्रतिबंध के बावजूद गाना बजाना, अभिनय करना, साम्रकूट के सेवन के फलस्वरूप अपमान भी सहन करना पड़ा। शरत का मन उन्मुक्त प्रांगण में लक्ष्यहीन दिशा की खोज में निकल पड़ा।

शरत चंद्र में वर्मा गमन के समय सहाज पर मनुष्यों की दशा देखकर दीनता का भाव पैदा हुआ। मनुष्यों के वास्तविक जीवन से साक्षात्कार हुआ। मौसा (वकील) अधीर नाथ की मौत ने फिर विचलित कर दिया। संगीत की पराकाष्ठा ने शरत को 'रंगून रत्न' की उपाधि दिलाई। व्यसनों के बावजूद सच्चे ईश्वर की खोज के लिए स्वामी से

शास्त्रार्थ भी किया। प्लेग नाम सुनकर उठ खड़े होते ऐसे में शरत का मन सेवा भाव से भर जाता। अजनबी की सेवा करता, दवाइयाँ भी देता। मानवीय करुणा का पाठ प्लेग की बिमारी से ग्रहण किया। जाति का बहिष्कार, अपनों द्वारा तिरस्कार, उच्चवर्ग की नफरत के शिकार, के बीच शरत का मन निम्न लोगों के बीच रमने लगा। बंग चंद्र की मृत्यु ने एकाकीपन, चिंतन व साहित्य लेखन का मार्ग प्रशस्त किया। यज्ञेश्वर को अनमेल विवाह न करने की सलाह देता है। परिस्थितियों वश सुशीला को पत्नी बनाया। प्लेग के आगोश में समाने पर सुशीला ने शरत के हृदय को झकझोर डाला। अध्ययन, लेखन और चित्रांकन भी भूल गया। प्रकृति चित्रण के सामने शरत का मन मनुष्य की आकृति से बंधा रहता। उनका मन ईश्वर से शिकायत भी करने लगता 'प्यार करने के लिए एक पात्र मुझे भी दे देते तो क्या उनके विश्व में मनुष्यों की कमी पड़ जाती।' इनके इन शब्दों में आंतरिक व्यथा का बोध होता है। बंगाल की कुल त्याग करने वाली भागिनी नारियों के करुण जीवन की दास्तान को नारी के इतिहास में प्रस्तुत किया।

मनवता के कारण निःस्वार्थ भाव से अर्जी लिखने को सहमति दे देते। मोक्षदा का आना शरत के जीवन में महत्त्वपूर्ण घटना थी। कृष्ण दास अधिकारी को दिये वचन का पालन भी करता है। आर्थिक विपन्नता की मझधार में मोक्षदा को जीवन साथी के रूप में स्वीकार करता है। गायित्री शरत के जीवन में कष्टों का पहाड़ लेकर आती है। मानव प्रेम की अतृप्ति पशु प्रेम के रूप में पूर्ण होती है। अनुभूति की क्षमता सभी के पास होती है, लेकिन अनुभूति को शब्दबद्ध करना सहनशील मानव का कार्य है। शरत चंद्र इसके अपवाद न रहे उन्होंने कहानी, उपन्यास और प्रबंध कार्यों की रचना कर अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति प्रदान की। सामाजिक मूल्यों की प्रत्यक्ष झांकी उनके नारी के चित्रण के रूप में देखने को मिली। उच्च कुल की सुशीला को व्यथा वेदना के बीच सत्यमार्ग का रास्ता बताता है। 'यमुना' के सुचारू प्रकाशन के लिए शरत की लगन से उनका साहित्यिक रूझान भी स्पष्ट होने लगा।

रंगून से कलकत्ता चले जाने पर भी विपत्तियों ने शरत का साथ नहीं छोड़ा। फणींद्रनाथ ने व्यंग्य सुने, कटु आलोचनाओं का सामना किया लेकिन शरत को शरत बनाने में कमी नहीं की।

पल्ली समाज में शवदाह और प्रायश्चित को अभिव्यक्ति दी। दमे रोग का निदान प्रायश्चित था। शरत ने स्वीकार किया कि दिशाहीन आवारा मन को शांति देवी, हिरन्या देवी ने सार्थकता प्रदान की। वर्मा प्रवास में जहाँ एक ओर बुद्धिजीवियों से चिंतन ग्रहण किया वहीं दसरी ओर महत्वहीन अनजाने मनुष्यों से प्रोत्साहन ग्रहण कर साहित्यिक धर्मदान से अवगत करा दिया।

कलकत्ता छोड़ने के समय शरत को साहित्यिक दृष्टि से सम्मान प्राप्त होने लगा था। उनकी लेखिनी का लोहा नाटककार विजेंद्र लाल तथा उनके पुत्र दिलीप कुमार राय (संगीतज्ञ) ने माना। संगीत लगन ने श्रद्धा का पात्र बना दिया। हिंदू समाज में वैवाहिक कुप्रथा को रेखांकित किया, रूपहीना, धनहीना ज्ञानदा का चरित्र पाठक के हृदय पर अमिट छाप छोड़ जाता है। देवदास में शरत का भावात्मक पक्ष मुखरित हुआ। चरित्र हीन ने नारी चरित्र की रक्षा की। सतीश के रूप में राजू की पूर्ति होने लगी। बांसुरी बजाकर समस्त पृथ्वी के रग–रग में संगीतमय आवरण की प्रस्तुति कर देता है। साहित्यिक गोष्ठियों की अध्यक्षता करते। विशुद्ध देशप्रेम की भावना ने साहित्यिक लेखन के प्रति आकृष्ट किया। विलासी कहानी द्वारा मृत्युंजय के साथ अस्पृश्य मुसलमान कन्या का विवाह कराकर दृढ़ इच्छा शक्ति से अवगत कराया। गृहदाह द्वारा ब्राह्मण समाज के पाखंड को उजागर किया। कुरीतियों को दूर करने को उत्सुक रहते थे। उनका मानना था कि मनुष्य के बाह्य रूप की अपेक्षा आंतरिक पक्ष प्रबल होता है। जलियांवाला बाग में हुए नर संहार से जन आक्रोश विस्तीर्ण हो गया। गरमदल की ओर उनका झुकाव था। हावड़ा जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष तथा अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य भी नियुक्त हुए। महात्मा गांधी के व्यक्तित्त्व का प्रभाव शरत पर भी पड़ा। स्वराज्य प्राप्ति के लिए चर्खे के स्थान पर सिपाही को प्रमुखता देते थे। आधुनिकता से आशय सभी वर्गों की संपन्नता से था। मातृभाषा को साथ लेकर अंग्रेजी भाषा को अपनाना भी आवश्यक है।

मानसिक स्वतंत्रता के पक्षधर थे। मन वचन कर्म से शरत चंद्र ने कांधे से कांधा मिलाकर देश सेवा का कार्य किया। हिंसा का मार्ग अपनाने वालों को सच्चे मन से प्यार करते थे। शरत का धरती से लगाव होना ही उनकी आत्मीयता रही। वास्तविकता से अवगत कराना उनकी रचनाओं का केंद्र बिंदु था। अपने चिंतन को देशबंधु चितरंजनदास से अवसरानुकूल व्यक्त भी करते थे। शरत की देश प्रेम की भावना के साथ ही पथेरदाबी रचना पर देश द्रोह का मुकद्दमा भी चला। बर्मा में रहते समय सर्वहारा वर्ग की सहायता को तत्पर रहते। दुःखी की आर्त पुकार सुनकर दौड़े चले आते। सेवा भाव के फलस्वरूप उन्होंने बालिकाओं की शिक्षा के लिए विद्यालय खोला। शोषण के विरूद्ध खड़े होकर अन्याय का डटकर मुकाबला करते। व्यवहारिकता उनके व्यवहार से झलकती थी। प्रत्येक आगंतुक को बताशे देकर स्वागत सत्कार करते थे। उनके निर्मल हृदय को देखकर ही थानेदार पश्चाताप करने को विवश हो जाता है। उन्होंने सदैव मानवता का समर्थन किया। पतितों में छिपी मनुष्यता को खोज निकाला। दासता से बड़ा कोई अन्याय नहीं था। गांधीवादी प्रभाव भी परिलक्षित होता है। जमींदारी प्रथा के खात्मे से चिंतित दिखाई देते थे। मानवीय करुणा का जो अध्याय प्रारंभिक पाठशाला में प्रारंभ किया वही जीवनभर प्रेरणा देता रहा। उनकी मानवता मनुष्य के साथ पशुओं के प्रति भी दिखाई देती है। मनुष्य को सबसे बड़ी शिक्षा पशु पक्षियों से मिलती है। राजा हो या भिखारी सभी को स्नेह रूपी वर्षा से सिंचित करते थे। एकता के लिए जीवन पर्यंत संघर्ष किया।

नामकरण : आवारा मसीहा उपन्यास नायक प्रधान रचना है। नायक शरत के इर्द–गिर्द कथानक का विकास एवं ह्रास है। निश्चित दिशा बोध के अभाव ने शरत के सामने दिग्भ्रम की स्थिति पैदा कर दी। फलस्वरूप आवारा रूप में भटकना पड़ा। युगीन, युगबोध एवं पतित, दलित शोषित नारियों ने शरत को संवेदनात्मक स्वरूप प्रदान किया। मानवतावादी भावना ने सेवा का भाव पैदा किया। संवेदनात्मक दृष्टिकोण ने चिंतन के लिए विवश किया। भविष्य के प्रति दिशाबोध के लिए जाग्रत किया। शरत सच्चे अर्थ में आवारापन के जीवन से गुजरे। पतंग उड़ाना, लट्टू घुमाना, गोली और गुल्ली–डंडा खेलना उनके स्वभाव के अनुकूल था। संगीत की धुन ने स्वच्छंद प्रवृत्ति प्रदान की। स्वच्छंद प्रवृत्ति के कारण डांट भी सहनी पड़ी। मोक्षदा, निरूपमा, नीरदा का सान्निध्य भी बंधन में न बांध सका। प्लेग की भयावहता ने आवारापन में गंभीरता को पैदा कर दिया।

नारी जागृति, मानवतावादी भावना, एकता की भावना, देशप्रेम का दायित्व बोध, शोषितों के प्रति संवेदनात्मक पक्ष, सामाजिक विकृतियों के विरूद्ध स्वर, निःस्वार्थ सेवाभाव, साहित्यिक दायित्व बोध, लेखन के प्रति प्रतिबद्धता, आदर्श प्रेम की पराकाष्ठा तथा दृढ़ इच्छा शक्ति के पक्षों ने आवारा जीवन को मसीहा बनाने में महती भूमिका निभाई। नामकरण सार्थक, अभिव्यक्ती की क्षमता से पूर्ण एवं चरित्रोद्घाटन करने में सक्षम हैं।

3.3.1 जीवनी कला के परिप्रेक्ष्य में :

विष्णु प्रभाकर द्वारा रचित आवारा मसीहा रचना उपन्यास होने पर भी जीवनी के अधिक निकट है। जीवनी कला के आधार पर आवारा मसीहा की समीक्षा करने से पूर्व जीवनी (विधा) की विशेषताओं को जानना आवश्यक होगा। जीवनी का संबंध महान व्यक्तित्त्व का आभास कराता है। व्यक्ति विशेष की आंतरिक एवं बाह्य जगत की घटनाओं की सत्यता के साथ अभिव्यक्ति को जीवनी कहा जाता है। यत्र–तत्र बिखरी घटनाएँ महान व्यक्ति के जीवन का अनिवार्य अंग होती हैं, जिनसे उसका प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से संबंध जुड़ा होता है। सामान्यतया जीवनी के लिए सत्यता, सरलता, स्पष्टता, रोचकता, क्रमबद्धता प्रमाणिकता का होना आवश्यक माना जाता है। यही गुण जब महान व्यक्तित्व से जुड़ते हैं तो जीवनी की झलक दिखाई पड़ती है। आवारा मसीहा उपन्यास की जीवनी कला के तत्त्वों के आधार पर विवेचन निम्नवत है –

महान व्यक्तित्त्व : व्यक्तित्व की महानता व्यक्ति को जनसामान्य से विशिष्टिता की ओर ले जाती है। आवारा मसीहा में जिस व्यक्तित्व का अंकन किया है वह शरत चट्टोपाध्याय का है। समस्त उपन्यास शरत की जीवन शैली को चरितार्थ करता है। अनुभवों ने शरत को दिव्यता की ओर आकृष्ट किया। स्वच्छंद प्रवृत्ति से शरत ने अभिव्यक्ति की

स्पष्टता को ग्रहण किया। अभावों की भट्टी में तपकर शरत का जीवन कंचनमय हो गया। दृढ़ इच्छा शक्ति का जन्म अभाव की कोख से हुआ। शरत चट्टोपाध्याय की महानता के लक्ष्य जन्म से मृत्युपरांत तक दिखाई देते हैं। सौंदर्य के प्रति आकर्षण, जन्मजात स्वच्छंदता, निर्भीकता, युगबोध, भविष्योन्मुखी जीवन दृष्टि, सहृदयता, परोपकार, सेवा की भावना, सत्यता, भाषा एवं स्वदेशप्रेम की भावना, प्रेम के आदर्श रूप का विवेचन, शोषितों के प्रति सहानुभूति, विश्व बंधुत्व की भावना, राजनैतिक उत्तरदायित्व का सफल निर्वाह, कुरीतियों के प्रति आक्रोश, दायित्व बोध, मानवतावादी भावना, एकता की भावना, स्पष्टता आदि गुण शरत के महान व्यक्तित्व का बोध कराते हैं। सौंदर्य बोध ने लेखन के प्रति आकर्षण को पैदा किया। शरत की सूक्ष्म मेधा ने कुरूपता में भी सौंदर्य को खोज निकाला। शरत के वैयक्तिक जीवन में भी सौंदर्य की छटा दिखाई देती है। पिता की भांति सौंदर्य बोध से ओत–प्रोत था। अध्ययन कक्ष को सजाकर रखता था। उसकी व्यवस्थित रखी पुस्तकें आकृष्ट करतीं, कापियों को स्वयं काट–छांटकर सुंदर बनाता था। शारीरिक सौंदर्य के प्रति जागरूक था। शरीर को सुंदर बनाने के लिए कुश्ती लड़ता, गोला फेंकता, तैरने के प्रति सचेत रहता। नारी सौंदर्य को देखकर अनायास उसका हृदय प्रशंसा को आतुर रहता। मोक्षदा के सौंदर्य को देखकर वह कहता है– वृष्टि से भीगे फूल–पत्तों जैसा लावण्य था, स्नेहमयी भी कम न थी। शरत ने वास्तव में कलाकार का हृदय पाया था। उनकी दृष्टि से सौंदर्य कैसे ओझल हो सकता था। ग्रामीण परिवेश की झलक उनके जीवन का अनिवार्य अंग थी, इसीलिए उसकी उपेक्षा न कर सके। शरत के शब्दों में सामता गांव का दृश्य देखा जा सकता है। चारों ओर फैले हुए धान के खेत, प्रहरी के समान फैले हुए केले और खजूर के पेड़ और पूरंपार भरी हुई नदी, तीव्रता से और उच्छवासित रूप से जल के संघर्ष के कारण फैन लट्टू की तरह घूमते हुए आगे बढ़ते थे। सौंदर्य का पान करने के लिए मित्रों को निमंत्रण देते, शिकार खेलकर सौंदर्यमयी वसुंधरा का आनंद उठाते थे। महान व्यक्ति अत्याचार को सहन नहीं कर सकता उसकी सूक्ष्म दृष्टि पीड़ित शोशित वर्ग को प्रमुखता प्रदान करतीत है। शरत की दृष्टि में पृथ्वी पर सभी समान हैं न कोई छोटा न बड़ा। उन्होंने वैधव्य के अंधकार से नारियों को निकालकर महिमा मंडित कर दिया। नारी भावना का चित्रण उपन्यास में स्थान–स्थान पर देखने को मिलता है। उन्होंने दीन–हीन नारियों के हृदय को भी निस्वार्थ ममता एवं करुणा की भावना से ओत–प्रोत कर दिया। उनकी नारी हीनता से कराह उठी, उन्होंने कहा– 'जिस धर्म ने बुनियाद ही रखी है आदम हौवा के पाप पर, और जिस धर्म ने नारी को बैठा रखा है संसार के समस्त अधः पतन के मूल में।' शरत की इन्हीं संवेदनात्मक गुणों के कारण नारियों के आदर्श रहे, प्रेरणा के पुंज है, पथ प्रदर्शक रहे, अराध्य रहे, उनका सान्निध्य पाकर नारियों ने अपने चरित्र की रक्षा की। प्रतिकार करने की शक्ति को ग्रहण किया। वह पुरुष को परमेश्वर न मानकर जीवन साथी मानते थे। उनका मानना था कि नारी की सबसे दुर्गति पति परमेश्वर के कारण ही हुई है। शरत का संपूर्ण जीवन मानवतावादी भावना को सुदृढ़ करने में व्यतीत हुआ। इस मानवतावादी भावना के कारण निरीह नारियों को आश्रय प्रदान किया। शराब के आदी मनुष्यों का समर्थन करते नजर आते हैं इसीलिए कि वे भी मनुष्य हैं, उन्हें भी आनंदित होने का अधिकार है। इस कुरीति के मूल में आर्थिक विपन्नता को दोषी ठहराते हैं। सरकार को इसी अभिशाप की ओर संकेत करते हुए कहते हैं– मनुष्य से किसी भी स्थिति में घृणा नहीं करनी चाहिए। जो व्यक्ति खराब दखाई दे रहे हैं उन्हें सुधारने की चेष्ठा करनी चाहिए। यह बहुत बड़ा काम है। भगवान के इस राज्य में मनुष्य जितना शक्तिशाली है उतना ही दुर्बल भी है। बीमार मनुष्यों की अर्जी लिखकर अपनी संवेदना जताते। उनकी असहाय स्थिति ने शरत को महानता की श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया। मैं मनुष्य को बड़ा करके मानता हूँ। उसे छोटा करके नहीं मान पाता। मैं किसी व्यक्ति को पतित देखना नहीं चाहता। शरत की मानवता का दायरा विस्तीर्ण था उसकी परिस्थिति में नर–नारी, पशु–पक्षियों का संसार समाहित है। भेलू की कहानी उनकी मानवीय करुणा का उदाहरण है। बुलबुल, श्यामा, सालिख और टुनटुन चिड़ियों की चहचाहट से कैसे बच सकते थे।

शरत में स्वदेश प्रेम की भावना कूट–कूट कर भरी हुई थी। जहाँ एक ओर वे गांधी जी के अहिंसात्मक प्रयासों की सराहना करते, वहीं दूसरी ओर गरम दल का साथ देकर अपनी स्वदेष प्रेम की भावना को सुदृढ़ आधार

प्रदान करते थे। उनका मानना था कि स्वतंत्रता हाथ पर हाथ रखकर अनायास प्राप्त नहीं होगी। उनका देशबंधु चितरंजनदास को समर्थन देना इसका प्रमाण है। वह भीड़ से अलग रहकर आदर्श स्थापित करना चाहते थे। उनकी इसी भावना को इन शब्दों में देखा जा सकता है – 'गवर्नमेंट यदि गोली चलाए तो उसके सामने खड़ा रह सकता हूँ। लेकिन भेड़ों के गिरोह में बैठे–बैठे दिन–रात कड़ियाँ गिनते–गिनते महीनों पर महीने काट देना मुझसे नहीं होगा।' तन मन और धन से सहायता देकर देश की सेवा के लिए कृत संकल्प रहते। देशभक्तों, स्वतंत्रता सैनिकों की अवसरानुकूल सहायता भी करते थे। देश के लिए हिंसा का मार्ग अपनाने वालों को सच्चे मन से प्या भी करते थे। उन्हीं के शब्दों में – 'देश के लिए जो काम करते हैं उन पर मैं श्रद्धा रखता हूँ, भले ही वे हिंसात्मक क्रांतिकारी हों या अहिंसात्मक सत्याग्राही' लाला बिहारी, स्वदेश रंजनदास, शचींद्रनाथ सान्याल, विपिन बिहारी गांगुली सभी को स्नेह करते थे। देश भक्तों के योगदान को देखकर वे कहते थे – 'कितने अद्‌भुत हैं ये विप्लवी लोग' पथेर दावी रचना में उनका स्वदेश प्रेम देखा जा सकता है।

सांप्रदायिकता की स्थिति में विवेक शून्य व्यक्ति पशुवत आचरण करता है। महान व्यक्तित्व इस स्थिति में भी सम भाव की भावना को पल्लवित करता है। शरत का जीवन इसका श्रेष्ठ उदाहरण है। उनका मानना था कि अन्याय और अत्याचार जहाँ होंगे, एकता की भावना पैदा नहीं हो सकती। जनकल्याण की भावना न तो हिंदू की अपेक्षा करती है न मुसलमान की और न जन्मभूमि की। संकीर्ण दृष्टिकोण से प्रगति का मार्ग अवरूद्ध हो जाता है। अल्लाह या भगवान एक ही परमेश्वर की ओर संकेत करते हैं। उन्होंने भाषा, संस्कृति एवं अलगाव जैसे ज्वलंत प्रश्नों को अपनी बेबाक राय से हल कर दिखाया।

सत्यता/प्रमाणिकता : शरत जीवन भर सत्य के समर्थक रहे। विरोधों, विसंगतियों के बावजूद सत्य का दामन नहीं छोड़ा। उनका जीवन सच्चाई की दास्तां बयान करता है। विष्णु प्रभाकर जी ने शरत जी के जीवन से संबंधित वृतांतों में सत्यता के प्रमाणस्वरूप उपन्यास के पीछे संबंधित व्यक्तियों, उनके पत्रों की विस्तृत सूची दी है, जिसमें लेश मात्र भी कल्पना का अंश नहीं है। निःस्वार्थ भाव से सेवा करना, मृत शवों का संस्कार करना, स्वदेश प्रेम के प्रसंग, नारियों के विविध वर्णनों में सत्य की झांकी देखी जा सकती है।

स्पष्टता के गुण से शरत ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्राप्त की। दूध का दूध और पानी का पानी का उदाहरण शरत का जीवन है, जिसमें युगबोध का प्रतिबिंब है, भविष्य के लिए चिंतन की शक्ति है, वर्तमान के प्रति जागरूक रहने का संदेश निहित है। शरत के संपर्क में आई नारियों ने स्पष्टता का गुण ग्रहण किया। उनकी नारी सत्य के लिए आदर्श पति का साथ छोड़ सकती है। उनकी नारियों में स्वाभिमान का गुण स्पष्टता के कारण स्वतः आ गया। अभया इसका प्रमाण है उसका मानना है कि पत्नी पति का मिलन तभी तक संभव रह सकता है, जब तक उसमें सत्यता छिपी होगी। वह कहती है– मैं ऐसे मनुष्य के सारे जीवन को लंगड़ा बनाकर सती का खिताब नहीं खरीदना चाहती। मैं निश्चयपूर्वक कह सकती हूँ कि हमारे निष्पाप प्रेम की संतान संसार में मनुष्यत्व के लिहाज से किसी से भी हीन न होगी। उसका मानना है कि संसार में सत्य सबसे बढ़कर है।

रोचकता/तटस्थता : आवारा मसीहा उपन्यास में रोचकता एवं तटस्थता के दर्शन होते हैं। शरत स्वयं भी मनोविनोद के लिए कभी नाव में बैठकर सैर करते, तो कभी संगीत की मधुर तान से मन को आनंदित करते। पतंग उड़ाते, बाग से चुराकर फल तोड़ते, नदी या तालाब पर बैठकर मछली पकड़ने में आनंद उठाते। उन्होंने समाज के उपेक्षित वर्ग को सहानुभूति के द्वारा रोचक ही नहीं बनाया अपितु सर्वग्राह्य भी बनाया। उपन्यास का अनेक भाषाओं में अनुवाद रोचकता के पहलू को उजागर करता है। साम्प्रदायिक अवसर पर जितना हिंदुओं को फटकारते उतना ही मुसलमानों को। दोनों के विवेक को जाग्रत करते, दायित्व का बोध कराते। शरत ने भाषा, संस्कृति, धार्मिक जैसी समस्याओं का हल तटस्थ रहकर किया।

विष्णु प्रभाकर ने शरत चंद के जीवन के विशृंखलित घटना क्रम को क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत किया। शरत

के जीवन के विविध पहलू–मानवतावाद, सेवा शुश्रूसा, नारी जागृति, दायित्वबोध, स्वदेश प्रेम, एकता का संचार, उपेक्षित वर्ग की सराहना के रूप में आवारा मसीहा उपन्यास में देखने को मिलते हैं। उपरोक्त लक्षणों के आधार पर आवारा मसीहा उपन्यास को जीवनी परक उपन्यास कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी।

2.3.2 संवेदनशील हृदय का अंकन : मनुष्य मानवीय गुणों से संपन्न होने के कारण ही मानव कहलाता है। मानवीय गुणों में त्याग, सेवा, क्षम, कर्त्तव्य, उत्तरदायित्व, संवेदना, सहनशीलता, सहानुभूति, प्रेम आदि को सम्मिलित किया जाता है। आवारा मसीहा उपन्यास को मानवीय गुणों का भंडार कहा जा सकता है। उपन्यास का पात्र आवारा मसीहा मानवीय गुणों का जीता–जागता उदाहरण है। उपन्यास को गरिमा प्रदान करने में संवेदनात्मक पक्ष महती भूमिका निभाता है। उपन्यास में स्थान–स्थान पर संवेदनात्मक पक्ष की प्रस्तुति की गई है। संवेदनात्मक पक्ष के मूल में जमींदारों का आतंक, समाज की संकीर्णता, मनुष्यों का निजी स्वार्थ, शोषण की विभीषिका, द्रवित हृदय की अभिव्यक्ति की महती भूमिका रही है। जमींदार की झूठी गवाही न देने के फलस्वरूप बैकुंठनाथ को अपनी मौत को गले लगाना पड़ता है। पति की मृत्यु पर न तो अपनी संवेदना व्यक्त कर पाती है तथा पति की अनुपस्थिति में जीवन यापन करना दूभर हो जाता है। जमींदार का शोषण एक ओर विद्रोह के लिए प्रेरणा प्रदान करता है वहीं दूसरी ओर तिल तिल कर जीवन जीने की विवशता भी दर्शाता है। अभागी पत्नी शीघ्रताशीघ्र क्रियाकर्म करके रात में ही गांव छोड़कर भाइयों के पास जाने को विवश होत है। इस अवसर पर मानव का सहृदय होना स्वाभाविक ही है।

बचपन की नटखट प्रवृत्तियों के कारण शरत की माँ चिंतित रहती थी। शरत की पिटाई के अवसर पर दादी माँ के हृदय में वात्सल्य का सागर उमड़ पड़ता था। माँ जहाँ पुत्र शरत की स्वाभाविक प्रवृत्ति को लेकर चिंतित होती वहीं दादी का दिल बच्चे शरत की पिटाई से दहल जाता। अपने हृदय के उद्‌गार इस प्रकार व्यक्त करती है– 'बहू तू इसे मत मार। एक दिन इसकी मति लौट आएगी और यह बहुत बड़ा आदमी होगा। मैं वह दिन देखने के लिए नहीं रहूंगी, लेकिन तू देख लेना मेरी बात झूठ नहीं होगी।' दादी के हृदयोद्‌गार संवेदनात्मक स्वरूप को उजागर करते हैं। भिखारी को देखकर समाज में उसे फटकार मिलती है वहीं शरत उस अभागे भिखारी की तरफदारी करता है। गांव की ब्राह्मण बेटी नीरू की कहानी ने शरत को झकझोर डाला, जिस नीरू के परोपकार, धर्मशील और कर्मठ होने का प्रमाण समाज था वही समाज समय आने पर उसके उपकार को तिलांजलि दे रहा है। सामाजिक बहिष्कार से पीड़ित नीरू ने शरत का मन मस्तिष्क आकृष्ट कर लिया। समय–समय पर रात में शरत उसकी सेवा करता, खाने–पीने की व्यवस्था भी करता। मृत्यु होने पर उसके शव को जंगल में फेंक दिया जाता है। जिस मृत्युंजय को विलासी और बूढ़े ओझा ने मनुष्य बनाने का प्रयत्न किया वही जब पत्नी के रूप में विलासी को अपनाता है तो समाज में तूफान खड़ा हो जाता है। जाति से बहिष्कृत किया जाता है। सांपों को पकड़कर जीविका चलाने को विवश होता है। पति–पत्नी की मृत्यु से जो समाज प्रसन्न हुआ उसका प्रत्यक्ष दर्शन शरत ने किया था, जिस लड़की ने एक ओर सेवा के द्वारा समाज को अपने अहसान से दबा दिया था, वह वहीं तिरस्कृत भी हुई। शरत ने तिरस्कृतों में देवत्व के दर्शन किये। उनमें उन्हें मानवता की गूंज सुनाई दी। इन्हीं संवेदनात्मक पहलुओं ने शरत को सहनशील बनाकर लेखन को उर्वरक पृष्ठभूमि भी प्रदान की। अभावग्रस्त जीवन में दाम्पत्य का सफ संचालन करने में शरत की माँ को देखा जा सकता है। अपने बहुमूल्य गहनों को बेचकर अपने पतिव्रत धर्म का निर्वाह किया। विषम परिस्थितियों में अपने चाचा के सामने हाथ फैलाकर अपने कर्त्तव्य का पालन तो किया साथ ही नारी सहृदयता का उदाहरण भी प्रस्तुत किया। अभावों के बीच माँ को बच्चे शरत के लिए चिंतित होना संवेदनशीलता का द्वार खोलता है– ''शरत मेरे बच्चे! मैं जानती हूँ अपनी सारी शरारतों के बावजूद तू एक अच्छा लड़का है। तू मन लगाकर पढ़ता रह मैं तेरी सहायता करूंगी।'' इन शब्दों में माँ का संतान के प्रति असीम लगाव का बोध होता है। स्वयं शरत को भी सामाजिक अवरोधों का सामना करना पड़ा। समाज के व्यक्त कार्यों को करने पर भी समाज के ठेकेदारों का हृदय द्रवित नहीं हुआ। ब्राह्मण भोज के अवसर पर शरत को दुत्कारा जाता है। अपनी उपेक्षा देखकर शरत की आत्मा रो उठती है। यायावर द्वारा आत्मिक शांति के प्रयास भी निरर्थक हो जाते हैं।

प्लेग की विभीषिका में असहायों की निस्वार्थ सेवा भाव ने बहिष्कृतों के प्रति कर्त्तव्यबोध को जाग्रत कर दिया। मनुष्य से घृणा करने पर शरत का हृदय द्रवित हो उठता है। मानवतावादी भावना के कारण शरत मनुष्य को बराबरी का हक दिलाने की वकालत भी करता है– ''भगवान के इस राज्य में मनुष्य जितना शक्तिशाली है उतना निर्बल भी।''

शरत का पशु पक्षियों के प्रति प्रेम भी मानवीय करुणा से परिपूर्ण था। जिस पक्षी को पालते उसके खान–पान की पूरी व्यवस्था भी करते। बाटू बाबा के मरने पर विधिवत नदी तट पर दाहसंस्कार करते हैं। बंशी वादन कुत्ते को भी जी–जान से पालते हैं। शरत ने प्रतिज्ञा की कि ''मैंने निश्चय किया है कि मैं उन्हें ही प्यार करूंगा जो असुंदर हैं।'' स्वदेश के प्रसंग पर शरत ने अपनी लेखनी न चलाने का निर्णय भारतीयों की अकर्मण्यता एवं स्वार्थी प्रवृत्ति के कारण किया। बंगाली वासंती की गिरफ्तारी पर मनुष्यों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। उनकी चेतना नष्ट हो गई थी शरत की व्यथा–''अब भी लोग विलायती कपड़े पहनते हैं, अब भी उसी सरकार की नौकरी करते हैं, अब भी कोर्ट कचहरी में वकील बैरिस्टर घिस घिस करते हैं। हम लोग दास हैं भाड़े के टट्टू और जरखरीद गुलाम हैं। हमारे लिए लज्जा की बात है।'' शरत ने अपने चरित्र–चित्रण में जिन पात्रों का चयन किया वे समाज को अपने प्रणेता, शरत के हृदय में देश के लिए, समाज के लिए, स्त्रियों के लिए जो वेदना थी वही उनके संवेदनात्मक स्वरूप का प्रमाण भी है। गुलामी की दास्तां ने शरत को नवीन–नवीन दर्शन प्रदान किया। जमीदारों के विरूद्ध पक्ष लेने को उत्सुक रहते। अन्याय का डटकर मुकाबला करते तथा अपनी सहृदयता से शांत गांव वालों के लिए 'आपुन जन' बन गये थे। शरत ने अपनी सहृदयशील भावना का जीवन पर्यंत समर्थन भी किया। रंगून में सर्वहारा वर्ग, गांव के लिए विद्यालय खोले, पथघाट बनवाये, उनकी ओर से स्वयं मुकद्दमें भी लड़ने से पीछे नहीं रहे। भीगी थर–थर कांपती भिखारिन को देखकर उसको धन देकर अपनी सहृदयता का परिचय करा देते हैं। अनाथ नवजात शिशु की देखभाल करके मानवतावाद को जीवित करते हैं।

'अपनी प्रगति जांचिए'

4. आवारा मसीहा रचना का स्वरूप क्या है?
5. आवारा मसीहा में किसका जीवन प्रतिबिंबित है?
6. आवारा मसीहा में कितने परिच्छेद हैं?
7. मानव संवेदना का सफल चित्रण करना किस पात्र का लक्ष्य रहा है?
8. बचपन में शरत के प्रति उदार हृदय रखने वाली कौन थी?
9. शरत के लेखन के मूल में निहित पक्ष क्या थे?

3.4 आवारा मसीहा का उद्देश्य

आवारा मसीहा उद्देश्य परक उपन्यास है। विष्णु प्रभाकर ने शरत चट्टोपाध्याय के द्वारा अपने निहित उद्देश्य की पात्रसृजन, सामाजिक जागरूकता, नारी जागृति, मानवतावाद, एकता की भावना, स्वदेश प्रेम का चित्रांकन, युगबोध, भविष्योन्मुखी जीवन दृष्टि, शिक्षा की आवश्यकता तथा स्वस्थ दृष्टिकोण को विकसित करने के द्वारा अभिव्यक्त किया है। उपरोक्त बिंदुओं पर आवारा मसीहा उपन्यास के उद्देश्य का चित्रांकन निम्नवत है –

चरित्र सृष्टि : आवारा मसीहा उपन्यास चरित्र प्रधान है। उपन्यास में प्रमुख पात्रों में शरत चंद का जीवन प्रतिबिंबित है। गौण पात्रों में रमेश, राजू, मोती लाल, सुरेंद्र, केदारनाथ, अमरनाथ, मोती लाल चट्टोपाध्याय, नयन, ईश्वर चंद्र, विद्यासागर, माइकल, मधूसूदन दत्त, धर्मदास, तारापद, रवींद्र नाथ, कविवर निर्मल चंद्र, चक्रवर्ती, योगेन्द्र, कृष्णदास, द्विजेन्द्र लाल राय, फणींद्र नाथ, सौरींद्र मोहन, देशबंधु, रामानंद, उपेंद्रनाथ, जवाहर लाल नेहरू, सुभाष

चंद्र बोस, राजेन्द्र नाथ, हेमेंद्र कुमार राय, श्यामा प्रसाद मुखर्जी तथा राम प्रसाद मुखर्जी आदि पात्रों द्वारा कथानक को क्रमबद्धता प्रदान की है। नारी पात्रों में मोक्षदा, सावित्री, निरूपमा देवी, कुसुम कुमारी, भुवनमोहिनी, सुशीला, राजबाला, कुमुद आदि नारियों ने शरत का सान्निध्य पाकर अपने जीवन को सार्थक बनाया। निराशा के गर्त में भी आशा की डोर पकड़े रखी। शरत चंद्र ही इस रचना का मुख्य नायक है। उपन्यास का कथानक शरत के इर्द–गिर्द घूमता है। शरत चंद्र के जीवन में सहानुभूति, करूणा, सेवा, त्याग, संवेदनशीलता, विद्रोह, मानवता, भविष्य जीवन बोध, देश के प्रति समर्पण की भावना आदि मानवीय गुण कूट–कूटकर भरे हुए हैं।

शरत जी ने नारी पात्रों की रचना समाज के उपेक्षित, शोषित, घृणित, त्यक्त, दयनीय, अकिंचन वर्ग से की। उनकी नारियों ने परिस्थितियों के आगे घुटने नहीं टेके अपितु शक्ति सामर्थ्य के अनुसार प्रतिकार भी करती हैं। स्वयं शरत जी ने स्पष्ट किया कि घटना को उपन्यास की असली वस्तु नहीं मानता। मेरा एक मात्र उद्देश्य चरित्र सृष्टि है उन्होंने घटनाओं की अन्विति कर चरित्र को प्रमुखता प्रदान की। उनके पात्र पाठकों को प्रिय लगते हैं– 'मेरा जीवन वर्णन और चरित्रांकन यथार्थ जीवन के बहुत निकट है।' शरत के ये उद्‌गार चरित्र चित्रण की ओर संकेत करते हैं। कमल नारी पात्र द्वारा शरत ने नवयुग की झलक का दिग्दर्शन कराया है। इसी पात्र की प्रशंसा करते हुए शरत ने मित्र कुमुदिनीकांत से कहा– 'दस वर्ष बाद बंगाल के घर–घर में कमल जैसी नारियाँ पैदा हो जाएंगी।' उन्होंने अपनी मनोदशा को व्यक्त करने के लिए पशु पक्षियों को अमर कर दिया।?

मानवतावाद की प्रतिष्ठा : आवारा मसीहा उपन्यास में मानवतावादी भावना का दिग्दर्शन कराया गया है। उपन्यास का प्रत्येक पात्र मानवतावाद से ओत–प्रोत है। उपन्यास का नायक शरत मानवतावाद का पुजारी है। इसी मानवता को जीवंतता प्रदान करने के लिए समाज का बहिष्कार सहा, आंतरिक कलह झेली, सेवा द्वारा मानवता को पल्लवित किया। उनका साहित्य सृजन के मूल में यही मानवतावाद ही था। शरत के शब्दों में– ''मैंने अनीति का प्रचार करने के लिए कलम नहीं पकड़ी, मैंने तो मनुष्य के अंतर में छिपी हुई मनुष्यता को, उसकी महीमा को जिसे सब नहीं देख पाते, नाना रूपों में अंकित करके प्रस्तुत किया है।'' उनकी दृष्टि में मनुष्यता से बढ़कर न कोई धर्म था न साहित्य न श्लोक, न मंत्र। उनकी दृष्टि में असहयोग आंदोलन की महत्ता बिना मानवता के व्यर्थ थी। मृत्यु के सन्निकट होने पर भी मानवता को नहीं छोड़ा– सोर जीवन मनुष्य को प्यार किया है। विषम परिस्थितियों में भी मानसिक संतुलन बनाये रखते थे। जीवन की पाठशाला में अनुभवों ने शरत के जीवन को दया, ममता के आगोश में ढकेल दिया जिसका प्रतिफल मानवता के रूप में सामने आया। वे जानने से भी अधिक मनुष्य को प्यार करते थे, निस्वार्थ भाव से दूसरों की सहायता करते। शराबी तक की हिमायत करने से नहीं चूकते। किसी भी दशा में घृणा नहीं करनी चाहिए, उन्होंने कभी किसी धर्म व समाज का विरोध नहीं किया। रूढ़ियों, कुरीतियों, अंधविश्वासों को देखकर उनकी आत्मा कराह उठती थी। उनका मानना था कि संकुचित दृष्टिकोण से मनुष्य धर्म का अपमान होता है। मनुष्य के समाज कार्यों के लिए परिस्थितियों को दोषी ठहराते थे। किसी प्रभाववश मनुष्य ऐसा करता है, तो मानवता कलंकित होती है। मैं मनुष्य को बहुत बड़ा करके मानता हूँ, उसे छोटा करके नहीं मान पाता। शरत की मानवता केवल मनुष्यों तक सीमित नहीं थी, उसके दायरे में पशु–पक्षियों का समाज भी समाहित था। भेलू कुत्ते का वृतांत इसका प्रमाण है। मोर, मैना, तोते, बकरों की उपस्थिति से उनकी मानवतावादी भावना को प्रबल आधार मिलता है।

नारी सहानुभूति : नर–नारी का परस्पर आकर्षण नारी सहानुभूति को चरितार्थ करता है। यह नारी जो मनुष्य को अपनी कोख से पैदा करती है वही मनुष्य द्वारा त्रासित की जाती है, प्रताड़ित की जाती है। समाज व धर्म की संकीर्णताओं का सामना पुरुष की अपेक्षा नारी को ही करना पडता है। आवारा मसीहा उपन्यास का मूल उत्स नारी के प्रति सहानुभूति एवं जागृति पैदा करना है। उनका मानना था कि जब तक स्वयं नारी अपने अधिकारों के प्रति सचेत नहीं होगी तब तक सभी प्रयोजन व्यर्थ ही हैं। हरमति पुजारी ब्राह्मण का क्रोध नारी मुक्ति का द्वार खोलता है– 'मैं वैष्णवी हूँ, तेरी जैसी छोटी जात के ब्राह्मण बहुत देखे हैं। मुंह संभालकर बात कर। न खाने को देता है, न पहनने को। उस पर डींग मारता है इतनी लंबी।' हरमति अपनी कुशाग्रबुद्धि से ब्राह्मण पुजारी की कलाई खोल देती

है। मिस्त्री पल्ली में स्त्री पर दोष लगाने पर स्त्री शांत नहीं बैठती...'तेरी जैसे छोटी जात वाले के ऊपर झाड़ू मारती हूँ। स्त्री के यह उद्‌गार समाज में व्याप्त जाति वैषम्य को उद्‌घाटित करते हैं। असहयोग आंदोलन को सफल बनाने के लिए पुरुष के साथ नारी की भागीदारी को आवश्यक मानते थे। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु भवानीपुर में नारी कर्ममंदिर की स्थापना की। शिवपुरी इंस्टीट्‌यूट में भाषण देते हुए शरत ने कहा– 'जिस चेष्टा में, जिस आयोजन में, देश की नारियाँ सम्मिलित नहीं हैं, उनकी सहानुभूति नहीं है। उनको केवल घर के भीतर बिठाकर केवल चर्खा कातने के लि विवश किया गया है। हमने औरतों को केवल औरत बनाकर ही रखा है, मनुष्य नहीं बनने दिया। उसका प्रायश्चित स्वराज्य से पहले देश को करना चाहिए। अवरानुकूल नारियों की सहायता भी करते थे। विरोध के फलस्वरूप दुर्गावति को अपने घर में शरण देकर नारी अस्मिता की रक्षा की। उसको शिक्षित कर आत्मनिर्भर बनाने की पहल की।

देश प्रेम का दिग्दर्शन : 'प्रेम' शब्द व्यापकता की ओर संकेत करता है। जिसकी परिधि में परिवार, समाज, देश तथा विश्व समाहित हो जाता है। आवारा मसीहा उपन्यास में प्रेम के स्वरूप का दिग्दर्शन विभिन्न रूपों में देखने को मिलता है। प्रेम के क्षेत्र में मानव प्रेम, प्रकृति प्रेम, स्वदेश प्रेम का दिग्दर्शन दिखाई देता है। मानव प्रेम के रूप में नारियों की महिमा मंडित कर प्रेम को पल्लवित किया। स्वदेश प्रेम के प्रयासों में प्रेम का सफल परिपाक देखने को मिलता है। देशभक्त जहाँ अपने प्राणों की आहुति देकर स्वदेश प्रेम के मार्ग को प्रशस्त कर रहे थे वही साहित्यकारों ने अपनी साहित्कि योगदान से अपने कर्म की इतिश्री करना उपयुक्त समझा। शरत जी युग दृष्टा थे इसीलिए उन्होंने असहयोग आंदोलन को सुदृढ़ आधार प्रदान करने के लिए साहित्यकारों को दायित्व के प्रति सचेत किया। लोकमत जाग्रत करने का गुरूभार संसार के सभी देशों में साहित्यिकारों के ऊपर रहा है। उन्होंने भीड़ से अलग अपना रास्ता अपनाया। उनकी दृष्टि में गोली के सामने खड़े होना भीड़ में रहने से कहीं श्रेयस्कर है। मन, वचन तथा कर्म से स्वतंत्रता संग्राम में योगदान देने के लिए देशबंधु के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलते थे। पथेर दाबी उनके राजनीतिक जीवन का दर्पण है। शरत चंद्र देश की मुक्ति के लिए हिंसा का मार्ग अपनाने वालों को सच्चे मन से प्यार करते थे। शरत के द्वारा गरम दल का समर्थन करना उनकी देश प्रेम की भावना को दर्शाता है। उनके दल का मानना था कि देश में आजादी आती है तो हमारे द्वारा ही आएगी तुम लोगों के द्वारा नहीं आएगी। स्वतंत्रता आंदोलन को सुदृढ़ आधार प्रदान करने के लिए विद्यार्थियों को सचेत करते थे। उनका विश्वास था सेवा और पीड़ा द्वारा ही स्वतंत्रता प्राप्त की जा सती है। देश प्रेम की भावना को एकता के बिना पूर्ण नहीं किया जा सकता। पारस्परिक सौहार्द के लिए सभी वर्गों की एकता अपेक्षित है। भाषा, धर्म, संस्कृति के आधार पर मनुष्यों को बांटने से देश प्रेम एवं एकता की समस्या का हल संभव नहीं है।

समाज की विषमताओं का चित्रण : आवारा मसीहा उपन्यास में विष्णु प्रभाकर ने समाज में व्याप्त अंधविश्वासों, कुरीतियों, विकृतियों, कुप्रथाआ आदि परंपराओं का स्थान–स्थान पर चित्रण किया है। दैवीय आपदा के समय शवों का अंतिम संस्कार करने पर नीच कहा गया। यायावर प्रवृत्ति स्वरूप आवारा कहा जाने लगा। भोजन खिलाते समय जातिगत वैषम्य का सामना करने पर शरत की आत्मा रो पड़ती है। मनुष्य के पतन का दायित्व व्यक्ति को न देकर परिस्थिति को देते हैं। पति की पौरुष प्रवृत्ति में अहं की छाया झलकती है। जाति का आरोप पत्नी हरिमति को विद्रोह करने पर प्रेरित करता है। समुद्र यात्रा करना अशुभ माना जाता था। छोटे भाई की पत्नी से बात करना पाप माना जाता था। अराजकता के कारण बंगाली समाज का दो भागों में विघटन हो गया था। नाच–गाना, अभिनय बुरा माना जाता था। विधवा विवाह की कल्पना करना असंभव था। शराब के प्रचलन के मूल में परिस्थतियों की भूमिका को रेखांकित करते थे। भाषा, धर्म, संस्कृति के आधार पर मनुष्यों के बी पनपते आपसी वैमनस्य का चित्रांकन करना आवारा मसीहा उपन्यास का मूल उत्स रहा है।

युगबोध एवं भविष्योन्मुखी जीवन दृष्टि : आवारा मसीहा उपन्यास युगबोध की विशेषता से पूर्ण है। शरत को शहरी

कृत्रिमता की अपेक्षा ग्राम की सादगी श्रेष्ठ लगती थी। अपनी इसी अनुभूति को उन्होंने कहा– मैं भक्त को प्यार करता हूँ। एक अनपढ़ ग्रामीण की सच्ची भक्ति में देवत्व रहता है। यथार्थवाद केवल वास्तविकता का ही नाम नहीं है। बाह्य एवं आंतरिक सामंजस्य के आधार पर ही यथार्थवाद को पहाना जा सकता है। उन्होंने मानवतावादी भावना की अभिव्यक्ति की। नारी पुरुष के समानाधिकार के प्रसंग, भविष्योन्मुखी जीवन दृष्टिबोध के प्रमाण हैं। देश की स्वतंत्रता के लिए साहित्यकारों के दायित्व का सफल निर्वाह करना आवश्यक मानते हैं। भषागत विचार पर अंग्रेजी और बंगाली दोनों भाषाओं को महत्ता प्रदान कर युगबोध के साथ भविष्य के लिए दिशा निर्देश प्रदान करते हैं। जमींदारी प्रथा के उन्मूलन के लिए अपनी बेबाक राय से अवगत कराते हैं। स्वयं अभिनय करके युगीन समाज की संकीर्णता का परित्याग किया। अपने मित्रों को नया करने की सलाह भी देते हैं– 'प्राचीन वस्तुओं को लेकर गर्व करने से बात नहीं बनती। नूतन गढ़ डालो।' शरत का नूतन की ओर संकेत करना जागरूक साहित्यकार का दायित्व दर्शाता है। उनकी दृष्टि में सच्चे मानव की पहचान कुत्सित गंदगी के दर्शन किये बिना नहीं की जा सकती। आंतरिक पक्ष के बिना पूर्ण मानव की परीक्षा नहीं हो सकती।

'अपनी प्रगति जांचिए'

10. आवारा मसीहा का केंद्रीय पात्र कौन–सा है?

11. आवारा मसीहा में किन भावनाओं का समावेश है?

12. नवीनता के प्रति आग्रह करने वाला पात्र कौन–सा है?

3.5 आवारा मसीहा की संवाद योजना :

आवारा मसीहा उपन्यास संवाद एवं कथोपकथन की दृष्टि से श्रेष्ठ रचना है। भावों की अभिव्यक्ति प्रभावोत्पादकता की सक्षमता, चरित्रोद्घाटन की कसौटी पर 'आवारा मसीहा' खरी उतरती है। रचना की सार्थकता सफल संवादों पर आश्रित होती है। कथानक की क्रमबद्धता संवादों के बिना असंभव है। संवाद एवं कथोपकथन में संक्षिप्तता, यथार्थता, रोचकता, स्पष्टता, नाटकीयता, मनोवैज्ञानिकता, स्वाभाविकता, व्यंग्यात्मकता आदि विशेषताओं को सम्मिलित किया जाता है। आवारा मसीहा उपन्यास का संवादयोजना की दृष्टि से विवेचन निम्नवत् है –

संक्षिप्तता : संक्षिप्त संवाद भावों को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं। आवारा मसीहा उपन्यास में स्थान–स्थान पर लघु संवाद योजना का सौंदर्य देखने को मिलता है। शरत और सुरेंद्र के मध्य वार्तालाप में संक्षिप्तता के दर्शन होते हैं –

कई क्षण मंत्रमुग्ध रहने के बाद सुरेंद्र ने पूछा – 'यह किसका है शरत?' 'मेरा'

'खरीदा है?'

'नहीं'

'तब'

'नीला ने दिया है।'

'एकदम दे दिया है।'

'सीखने के लिए दिया है।'

उपरोक्त संवाद संक्षिप्त होने के साथ ही जिज्ञासा के गुणों से भी युक्त है। यहाँ पर प्रश्नोत्तर का क्रम संक्षिप्त स्वरूप का वर्णन करता है। अंग्रेजों के अत्याचार से शरत का मन कराह उठा। उसने अपनी प्रत्यक्ष आंखों से

भारतीयों की पीठ पर कोड़ों की मार को देखा। इस अत्याचार का बदला लेने की युक्ति में वह जुट जाता है। रास्ते को रस्सी से अवरूद्ध कर रोज साहब को घोड़े सहित पृथ्वी पर गिरा देता है। राजू और रोज साहब के मध्य वार्तालाप में संक्षिप्तता के साथ प्रतिकार की भावना को इन शब्दों में देखा जा सकता है–

राजू– 'फिर कभी किसी बेकसूर मुसाफिर को मारोगे?

'कभी नहीं!'

'बोलो 'माफ करो!'

'माफ करो!'

'घर जाओ!'

इन संवादों में रोज साहब की विवशता को देखा जा सकता है। साथ ही पराधीन भारत में भारतीयों की दयनीय स्थिति का अनुमान भी लगाया जा सकता है।

स्पष्टता : संवाद योजना की सार्थकता स्पष्टता की ओर संकेत करती है। संवाद जितने स्पष्ट होंगे, भावों की स्पष्टता उतनी ही अधिक होगी। विशिष्ट चरित्र के साथ साधारण वर्ग का पात्र भी कथन के मर्म को समझ लेता है। रमाबाबू और शरत के बीच होने वाले वार्तालाप में स्पष्टता को देखा जा सकता है –

शरत बाबू – 'इसे तुम नहीं छाप सकोगे'

रमाबाबू – 'क्यों नहीं छाप सकूंगा?'

शरत बाबू – 'क्योंकि यह भीषण रचना है।'

रमाबाबू – 'मैं इसे छापूंगा। आपने इसे समाप्त कर लिया है।'

शरत का संवाद रमाबाबू को युगीन परिस्थितियों में प्रकाशकों की मनःस्थिति को दर्शाता है, वहीं रमाबाबू के संवादों में अपने कर्म के प्रति दृढ़ता एवं कर्त्तव्यबोध की झलक देखने को मिलती है। शरत की 'शेष प्रश्न' रचना की सार्थकता पर उठाये गये प्रश्नों में स्पष्टता को देखा जा सकता है। रचना में चरित्र बहुत हैं पर वे सभी रक्त मांस हीन हैं। इसमें न साहित्य है और न सौंदर्य, न भाव सौष्ठव है, है केवल विकृत संस्कार। शरत ने अपने मित्र कुमुदिनी कांत से कहा– शेष प्रश्न का अध्ययन उसके विकास और क्षमता के आधार पर होना चाहिए। 'दस वर्ष बाद बंगाल के घर–घर में कमल जैसी नारियाँ पैदा हो जाएंगी।' शरत की इस भविष्यवाणी में साहित्य सृजन मूल में भविष्योन्मुखी जीवन दृष्टि को देखा जा सकता है। शरत और डॉक्टर के मध्य होने वाले संवादों में स्पष्टता, निर्भीकता को देखा जा सकता है। बीमारी के समय मानव स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ जाता है। लेकिन शरत के स्वभाव में वाकपटुता एवं स्पष्टता की झांकी देखने को मिलती है।

शरत – 'देश जाकर बहुत माछ खाए हैं।'

डॉक्टर – 'हजम नहीं कर पाते तो इतना क्यों खाते हो?'

शरत – 'लोभ के कारण एक–एक दिन में पाँच–पाँच, छह–छह तक तपसे माछ खाए हैं।'

डॉक्टर – 'अच्छा काम नहीं किया।'

चरित्रोद्घाटन में सहायक– आवारा मसीहा उपन्यास में प्रयुक्त संवाद चारित्रिक विशेषताओं को उद्घाटित करने में सक्षम है। संवाद पात्रों की आंतरिक एवं बाह्य अंतर्मन की अनुभूति करा देते हैं। संवादों को पढ़कर व सुनकर पात्रों

के व्यक्तित्त्व का अनुमान लगाया जा सकता है। पारिवारिक प्रतिबंध के बावजूद शरत का मन शरारत करने को उत्सुक रहता है। शरत–मणि के बीच बोले गये कथोपकथन में चारित्रिक झांकी देखी जा सकती है।

मामा – 'तू कहाँ चला गया था रे।'

शरत – 'मैं गोदाम में था।'

'क्या खाता था?'

'वही जो तुम खाते थे।'

'कौन देता था?'

'छोटी नानी।'

उपरोक्त संवाद में शरत की हाजिरजवाबी और छोटी नानी की सहृदयशीलता का गुण दिखाई देता है। नीला और शरत के बीच प्रयुक्त संवादों में आदर्श मित्रता की झांकी देखी जा सकती है। शरत को अचेतावस्था में देखकर नीला की घबराहट मित्रता की झलक दिखा देती है।

घबराकर उसने पुकारा – 'शरत ओ शरत!'

लेटे लेटे शरत ने कहा – 'अंदर आ जा!'

नीला ने पूछा – 'बीमार है?'

शरत – 'हा!'

नीला – 'रक्त की उल्टी हुई है?'

शरत – 'दुत पागल!'

नीला – 'तो फिर तेरे कपड़ों पर यह रक्त कैसा है?'

शरत – 'बेटे नेवले की करतूत है।'

आदर्श मित्र की पहचान विपत्ति की घड़ी में की जाती है। नीला के हृदय में शरत के लिए तड़प और आत्मीय लगाव का बोध इन संवादों से किया जा सकता है। अन्याय के विरूद्ध खड़े हाना राजू की विशेषता थी। इसीलिए कूप पर पानी भरत समय स्त्रियों से छेड़छाड़ करने वाले युवक की पिटाई करता है।

व्यक्ति – 'फिर आओगे?'

राजू – 'नहीं नहीं इधर पैर भी नहीं रखूंगा।'

राजू – ' खाओ ईश्वर की सौगंध।'

व्यक्ति – 'ईश्वर की सौंगध खाता हूँ, फिर इधर नहीं आऊंगा।'

राजू – 'जाओ, माफ किया।'

इन संवादों में राजू की चारित्रिक विशेषताओं को देखा जा सकता है। संवेदनात्मक पक्ष के साथ अन्याय के विरूद्ध लड़ने की क्षमता का भी बोध होता है।

व्यंग्यात्मकता तथा यथार्थता : आवारा मसीहा उपन्यास के संवादों में व्यंग्य के साथ यथार्थता के दर्शन होते हैं। व्यंग्य के द्वारा पात्र की मनोवैज्ञानिकता के दर्शन होते हैं। व्यंग्य के द्वारा पात्र की मनोवैज्ञानिकता का पता चलता है,

यथार्थता से वास्तविक स्थिति का आभास हो जाता है। रवींद्र नाथ और शरत के बीच आपसी वार्तालाप में व्यंग्य के दर्शन होते हैं –

रवींद्रनाथ – 'शरत तुम्हारे हाथ में यह पैकेट कैसा है?'

शरत – 'जी ऐसे ही एक चीज है।'

रवींद्रनाथ – 'क्या चीज है? कोई पुस्तक है?'

शरत – 'जी हाँ!'

नवींद्रनाथ – 'कौन सी पुस्तक है? शायद पादुका पुराण है?'

इन संवादों में मनोविनोद को देखा जा सकता है।

मोतीलाल एवं अघोरनाथ के संवादों में सामाजिक स्थिति के साथ वैयक्तिक विपन्नता देखने को मिलती है –

अघोरनाथ – 'तुम यह घर छोड़कर क्यों चले गये मोतीलाल?'

मोतीलाल – 'अच्छा नहीं लगता था, छोटे काका।'

अघोरनाथ – 'इतनी ठंड में कपड़ा क्यों नहीं पहनते?'

मोतीलाल – 'है नहीं।'

अघोरनाथ – 'शरत कहाँ है?'

मोतीलाल – 'झगड़ा करके कहीं भाग गया है।'

अघोरनाथ – 'आजकल कुछ काम–वाम है?'

मोतीलाल – 'नहीं'

अघोरनाथ – 'तब कैसे चलता है?'

मोतीलाल की आंखें डबडबा आई, टपटप आंसू गिरने लगे।

व्यावहारिकता एवं वाक्पटुता : व्यावहारिकता एवं वाक्पटुता के कारण 'आवारा मसीहा' उपन्यास के संवादों में सजीवता के दर्शन होते हैं। मानवीय व्यवहार चारित्रिक विशेषता की रेखांकित कटुता है। शरत का जीवन व्यवहारिकता का श्रेष्ठ उदाहरण है जब एक बंधू को शरत द्वारा दिये बताशों पर आश्चर्य होता है तो शरत की अभिव्यक्ति में व्यवहार, शिष्टाचार झलकता है। शरत के शब्दों में – 'यह तो भाई, गांव का शिष्टाचार है।' पास में बाजार नहीं था, देने को मिठाई हमेशा मिलती नहीं सो बताशे तैयार रखते थे, उनका मानना था, खूब खाएंगे, तभी तो लोग यहाँ आएंगे।

शरत और उपेंद्र नाथ के संवादों में व्यवहार की शिक्षा देखने को मिलती है।

शरत – 'कहाँ जाते हो?'

उपेंद्रनाथ – 'अपने घर जाता हूँ।'

शरत – 'खा–पीकर जाना।'

उपेंद्रनाथ – 'इस किताब वाले के घर खाना–पीना करने के लिए कहते हो?'

शरत – 'बहुत दूर से आए हो। बहुत दूर जाना है। आखिर चाय–नाश्ता लेकर जाओ।'

स्टीमर पर यात्रा करते समय शरत कप्तान को बिना हिचक अपनी वाक्पटुता से अवगत करा देता है। तंबाकू खाने पर शरत के कथनी में वाक्चातुर्य की छटा देखी जा सकती है। महात्मा जी, देशबंधु और शरत के संवादों में राजनैतिक झांकी भी दिखाई देती है।

महात्मा जी – 'शरत बाबू, आपकी चर्खे में श्रद्धा नहीं है?'

शरत – 'रती–भर भी नहीं।'

महात्मा जी – 'लेकिन कातते तो आप चर्खे के अनेक प्रेमियों से अच्छा हैं।'

शरत – 'मैं चर्खे को नहीं आपको प्यार करता हूँ।'

महात्मा जी – 'चर्खा कातेने से स्वराज्य में सहायता मिलेगी।'

शरत – 'मेरे विचार से स्वराज्य प्राप्ति में सिपाही ही साहयक हो सकते हैं, चर्खे नहीं।'

शरत जहाँ एक ओर गांधी जी की अहिंसा एवं चर्खे में विश्वास करते थे, वहीं स्वदेश के लिए चर्खे से अधिक सिपाही की भूमिका को रेंखाकिंत करते हैं। शरत के इन विचारों में भविष्योन्मुखी जीवन दृष्टि के दर्शन होते हैं। साथ ही राजनैतिक जागरूकता का आभास भी होता है।

'आवारा मसीहा' उपन्यास संवाद योजना की दृष्टि से श्रेष्ठ कृति है। रचना में प्रयुक्त संवादों में वैयक्तिक क्षमता, सामाजिक दिग्दर्शन, भविष्योन्मुखी युगबोध, व्यवहारशीलता तथा प्रत्युत्पन्नमति के दर्शन होते हैं। स्वाभाविकता, यथार्थता, संवेदनात्मक प्रस्तुति के साथ वाक्चातुर्य भी देखने को मिलता है।

'अपनी प्रगति जांचिए'

13. संवाद को अन्य किस नाम से जाना जाता है?

14. संवाद की दो विशेषताएँ लिखिए।

शरत चंद्र चट्टोपाध्याय : 'आवारा मसीहा' उपन्यास में चरित्र–चित्रण का सफल प्रयोग देखने को मिलता है। उपन्यास में प्रयुक्त पात्र अपनी चारित्रिक विशेषताओं के कारण सर्वग्राह्य ही नहीं मर्मस्पर्शी भी हैं। सहृदय पाठक के मन मस्तिष्क पर अमिट प्रभाव छोड़ने में सक्षम हैं। पात्रों में गतिशीलता के दर्शन होते हैं। भले ही किसी पात्र का वैयक्तिक जीवन पाठक को प्रिय न लगे, किंतु उसकी व्यवहारशीलता, सेवाभाव, समाज के प्रति चिंतन की शक्ति के फलस्वरूप पाठक उसे विस्मृत नहीं कर पाता। आवारा मसीहा उपन्यास का मुख्य पात्र शरत चंद्र है। रचना का केंद्र बिंदु, कथा का आधार शरत चंद्र पर आश्रित है। उपन्यास प्रारंभ से अंत तक शरत के जीवन का वृतांत प्रस्तुत करता है। उपन्यास का नामकरण यही सिद्ध करता है कि शरत चंद्र ही रचना का प्रमुख पात्र है। नायक प्रधान रचना में नायक के जीवन की झांकी न दिखाई दे तो नामकरण की सार्थकता निषिद्ध हो जाती है। शरत के जीवन चरित्र का निर्माण जिन परिस्थितियों के द्वारा हुआ उनकी उपेक्षा करने से शरत के जीवन की संपूर्ण झांकी दिखाई नहीं दे सकती। शरत के व्यक्तित्त्व निर्माण समाज, परिवार, जाति, विशृंखलित सामाजिक संरचना तथा देशधर्म के दिग्दर्शन अनायास हो जाते हैं। शरत के जीवन में आर्थिक विपन्नता, गहन अध्ययन की प्रवृत्ति, सौंदर्य प्रेम, दृढ़साहस, सेवा का भाव, दायित्व बोध, स्वदेश प्रेम, अनुभव, सहानुभूति, मानवतावादी भावना, नटखट प्रवृत्ति, व्यवस्था के प्रति आक्रोश, भविष्योन्मुखी जीवन बोध, व्यवहारिकता, कला प्रेम, यायावर प्रवृत्ति, मानवीय करुणा एवं समन्वय की भावना आदि गुणों को देखा जा सकता है। उपरोक्त विशेषताओं के आधार पर शरत चंद्र चट्टोपाध्याय की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन अपेक्षित है।

शरत चंद्र चट्टोपाध्याय का जीवन कष्टों, संघर्षों की खुली किताब है। इन्हीं अभावों से शरत ने धैर्य तथा दृढ़ इच्छा शक्ति को पैतृक स्वरूप में ग्रहण किया। पिता की आर्थिक विपन्नता के फलस्वरूप शरत को ननिहाल में बचपन बिताना पड़ा। ननिहाल में मिलने वाली उपेक्षाओं से शरत ने निर्भीकता को जीवनपर्यंत के लिए गांठ में बांध लिया। अभावों ने शरत के जीवन को वह प्रौढ़ता प्रदान की कि रवींद्रनाथ टैगोर भी शरत के व्यक्तित्व का लोहा मानते थे। शरत के साहित्यिक जीवन का प्रारंभ भीगी पलकों से हुआ। इन्हीं अभावों ने गहन अध्ययन की ओर आकृष्ट किया। चोरी छिपे पिता की पुस्तकों का अध्ययन करने की आदत डाली। अध्ययन की प्रवृत्ति के कारण शरत ने अभिव्यक्ति की कला को आसानी से ग्रहण कर लिया। शरत चंद्र की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन निम्नवत् है–

(क) सौंदर्य प्रेमी – शरत क पैनी दृष्टि ने जहाँ एक ओर समाज की कुरीतियों, विकृतियों, विसंगतियों को खोज निकाला, वहीं प्राकृतिक सौंदर्य की उपेक्षा नहीं कर पाए। शरत की सौंदर्य भावना में भाव, मानव तथा प्राकृतिक सौंदर्य की भावना को देखा जा सकता है। भाव सौंदर्य का प्रमाण उनकी समय–समय पर प्रकाशित रचनाओं के रूप में सामने आता है। मानव–सौंदर्य में उनका रूझान स्त्री सौंदर्य की ओर अधिक था। उनकी दृष्टि ने कुरूपता में भी सौंदर्य को खोज निकाला। शरत की सौंदर्य भावना को उनके जीवन में देखा जा सकता है। सौंदर्य भावना को पिता से विरासत में पाया। पढ़ने के कक्ष को सजाकर रखते। उनकी पुस्तकें बरबस निगाहों को खींच लेतीं। कॉपियों को देखकर उनकी सौंदर्य दृष्टि का अनुमान लगाया जा सकता है। शारीरिक फूर्ति के लिए कभी तैरना न भूलते, कुश्ती लड़कर शारीरिक क्षमता का आभास करा देते। शरत सच्चे अर्थों में सौंदर्य के उपासक थे। शरत के शब्दों में ''जो सौंदर्य है, वही पुरुष है, वही प्रकृति है।'' इसीलिए जो सौंदर्य का उपासक है, वह प्रकृति का भी उपासक है मनोरम और भयानक, प्रकृति के इन दोनों रूपों का, और स्वयं भगवान का भी। क्योंकि सर्वोत्तम सौंदर्य ही तो भगवान है। भागलपुर का सौंदर्य शरत की आंखों से ओझल न हो पाया। सुरेंद्र को अपनी इसी भावना का परिचय देता हुआ शरत कहता है– ''भागलपुर क्या मुझे कम अच्छा लगहा है? घाट के टूटे स्तूप पर से गंगा में कूदने में कितना मजा आता है? उस पार वह जो झाऊ का वन है, उसे क्या भूल सकूंगा। वह मुझे पुकारेगा और मैं चला आऊंगा।''

(ख) दृढ़ साहस : शरत के जीवन में दृढ़ इच्छा शक्ति ने नवीन आभास स्थापित किये। अभावों एवं जुझारू प्रवृत्ति के फलस्वरूप दृढ़ता एवं साहस के गुण उनके व्यक्तित्त्व में स्वतः समा गये। विषमताओं ने उनके दृढ़स्वभाव को उर्वरक पृष्ठभूमि प्रदान की। 'शरत चोर नहीं था। वह रॉबिन हुड के समान दुस्साहसी और परोपकारी था। अर्द्धरात्रि के घनीभूत अंधकार में जब मनुष्य तो क्या कुत्ते भी बाहर निकलने में डरते थे, वह चुपचाप पूर्व निर्दिष्ट बाग में, ताल पर पहुँचकर अपना काम कर लाता था।

मृत्युंजय के साथ विलासी का विवाह कराकर साहसी प्रवृत्ति का परिचय दिया। उनकी मान्यता थी कि तन्मय होकर किया गया साहित्यिक कार्य हिंदू, मुसलमान के कटघरे में बंधा नहीं होता। स्वदेश भावना के फलस्वरूप सरकार एवं समाज द्वारा किये गये आक्षेप को निर्मूल सिद्ध करता है। स्वयं शरत के शब्दों में– मैं और क्या लिखूं? मैं लिखूंगा और सरकार जब्त कर लेगी। पराधीन देश में साहित्य–साधना करने में व्यथा ही मिलती है। सामान्यतया ऑपरेशन का नाम सुनकर फौलादी मन भी भीगी बिल्ली हो जाता है। शरत का जीवन इसके विपरीत था तथा स्वयं डॉक्टर को ऑपरेशन की अनुमति प्रदान करने में साहसी प्रकृति का बोध होता है– 'मैं कोई स्त्री नहीं हूँ, मेज पर मर जाने की भी कोई संभावना नहीं है, और हो तो मैं लिखकर दे सकता हूँ। किसी को बुलाने की जरूरत नहीं है। देश प्रेम का प्रसंग सुनकर विश्वास नहीं होता कि यायावर प्रवृत्ति युक्त मनुष्य ने देश के लिए भीड़ से अलग रहकर अपना रास्ता चुना।

(ग) सेवा की भावना : शरत सेवा की प्रवृत्ति के कारण कभी अपने मार्ग से विचलित नहीं हुए। समाज, परिवार की बाधाओं ने उनकी सेवा की भावना को कुंठित न करके सुगमता प्रदान की। प्रतिबंध के बावजूद नीरू की एकांत में जाकर सेवा करता, कभी–कभी अवसर मिलने पर फल लाकर खिला देता। निरीह असहायों की चीख से शरत का मन विचलित हो जाता। प्लेग के फलस्वरूप मृत व्यक्तियों का अंतिम संस्कार करने को उत्सुक रहता। राजू के सान्निध्य में रहकर जिस मानवता तथा करूणा का पाठ शरत ने सीखा उसका जीवन पर्यंत पालन भी किया। बीमार का समाचार सुनकर निस्वार्थ भाव से दवा लेकर दौड़े चले जाते। कुलीन वर्ग भले ही शरत को हेय दृष्टि से देखता हो लेकिन बंगाली समुदाय में सभी की आँख का तारा था। वेश्यालय में जाकर भी सेवाभाव को नहीं छोड़ पाता था। रंगून की प्रसिद्ध नर्तकी की चेचक होने पर सेवा करता है। मृत्योपरांत विधिवत अंतिम संस्कार भी करता है। शरत की सेवा के दायरे में मनुष्यों के साथ पशु, पक्षियों की उपेक्षा नहीं हो पाती थी। बाटू कुत्ते के मरने पर विधिवत नदी तट पर ले लोकर दाह संस्कार करता है। मित्र के पूछने पर शरत का उत्तर– 'मेरे बच्चे की मृत्यु हो गई है।' इस वास्य में सेवा की भावना स्वयं दृष्टिगोचर हो जाती है।

(घ) मानवता का पुजारी : आवारा मसीहा उपन्यास का नायक शरत चंद्र मानवता का पुजारी है। जन्मजात अभावों ने शरत के ह्रदय में प्राणी मात्र के प्रति दर्द का जो भाव पैदा किया वह जीवन पर्यंत तक यथावत रहा। शरत की दृष्टि ने असहाय नारियों में मानवत के दर्शन किये। उनकी मानवतावादी भावना का उपन्यास में स्थान–स्थान पर वर्णन देखने को मिलता है। उनकी दृष्टि में अमीर के साथ गरीबों में भी मनुष्यता के दर्शन होते हैं। अभागे मनुष्यों को स्नेहपूर्वक सुधारने की कोशिश करते। उनका मानना है कि– 'मनुष्यों से किसी भी अवस्था में घृणा नहीं करनी चाहिए।' जो व्यक्ति खराब दिखाई देते हैं उन्हें सुधारने की आवश्यकता है। मेले के अवसर पर गांव वालों का साथ देने में दरोगा की भी खरी खोटी सुनते हैं लेकिन प्रतिकार की भावना का परिचय नहीं देते। जब दरोगा पश्चाताप कर अपनी गलती स्वीकार करता है तो चिट्ठी लिखकर मानवता का परिचय देते हैं। असहयोग आंदोलन के अवसर पर पुरुषों के साथ स्त्रियों की सहभागिता पर बल देकर मानवतावादी भावना को सुदृढ़ आधार प्रदान करते हैं। स्वयं शरत के शब्दों में –'नारी जाति को मैं कभी छोटा करके नहीं देख सका।' हमने नारी को जो मनुष्य नहीं बनने दिया उसका प्रायश्चित स्वराज्य के पहले देश को करना चाहिए। उनका मानना था कि देश की प्रगति व ज्वलंत प्रश्नों का हल नारी की उपेक्षा करके नहीं मिल सकता। शरत की मानवतावादी भावना की सीमा में पशुओं तथा पक्षियों की मनुष्य के समान ही महत्ता थी। एक ओर वर्षा में भीगी बुढ़िया की दिल खोलकर सहायता करते हैं वहीं भेलू के अस्वस्थ होने पर चिंतित हो जाते हैं। कुत्ते के लिए शरत मजूमदार से प्रतिशोध लेने को उत्सुक हो जाते हैं– 'मैं होता तो रिवाल्वर से उसे भी मार देता। तुम डरो मत। यदि वह नालिश करेगा तो पैसा हम देंगे। उसने हमारे लड़कों को मारा है।'

(ङ) स्वदेश प्रेम की भावना से ओत–प्रोत : 'आवारा मसीहा' उपन्यास में सामाजिक व्यवस्था के साथ राजनैतिक घटनाचक्र भी दिखाई देता है। शरत के व्यक्तित्व का विकास राजनैतिक दायित्व बोध की भावना से पूर्ण हुआ है। सैनिक जहाँ अपने प्राणों की आहुति देकर देश के प्रति दायित्व का निर्वाह कर रहे थे वहीं साहित्यिकारों ने अपनी रचनाओं द्वारा समाज में मनःस्थिति को बदलने एवं चिंतन करने की भावना को पैदा किया। शरत की जब कोई रचना प्रकाशित होकर आती, तो तूफान खड़ा हो जाता। सामान्य पाठक पढ़कर उसकी आलोचना कर अपनी मन की भड़ास निकाल लेता वहीं संवदेनशील व्यक्ति में विचारों की आंधियाँ चलने लगतीं। उचित कर्त्तव्य पालन के लिए अंतर्रात्मा से संलग्न भी हो जाता है। शरत की दृष्टि में – 'स्वतंत्रता शक्तिशाली के लिए, योग्य के लिए ही अच्छी है।' स्वतंत्रता आंदोलन में साहित्यकारों के दायित्व के संबंध में शरत के विचार दायित्व बोध से युक्त हैं– 'राजनीति में योग देना देशवासियों का

कर्त्तव्य है। विशेषकर हमारे देश में वह राजनीतिक आंदोलन देश की मुक्ति का आंदोलन है। इस आंदोलन में साहित्यकारों को सबसे आगे बढ़कर योग देना चाहिए। लोकमत जाग्रत करने का गुरूभार संसार के सभी देशों में साहित्यिकों के ऊपर रहा है।' शरत के इन उद्‌गारों में राजनीतिक परिपक्वता का बोध होता है। शरत की दृष्टि में भेड़–बकरियों की तरह मूक होकर अन्याय सहन करने से श्रेष्ठ है सीने पर गोली खाकर अपने कर्त्तव्य बोध को अवगत कराना। समय–समय पर देश भक्तों की सहायता करते। वह देश की मुक्ति के लिए हिंसा का मार्ग अपनाने वालों को सच्चे मन से प्यार करते थे, इसीलिए उनको गरम दल का समर्थक माना जाता था। उनका विश्वास था कि देश की आजादी आती है तो हमारे द्वारा ही आएगी।

(च) भविष्योन्मुखी दृष्टिबोध : 'अवारा मसीहा' का नायक शरत भविष्योन्मुखी जीवनदृष्टि से ओत–प्रोत है। इसीलिए मानवता का तकाजा मानकर निरीह मनुष्यों को बराबरी का अधिकार दिलाने की चेष्टा करता है। वहीं अस्पृश्य/त्यक्त मनुष्यों की सेवा द्वारा मनुष्य को सोचने पर विवश भी करता है। नारी को पुरुषों के समान अधिकार दिलाकर अपनी भविष्योन्मुखी विचारधारा से अवगत कराता है। साहित्य सृजन द्वारा साहित्यकारों को दायित्वबोध का ज्ञान कराता है। देश की स्वतंत्रता के लिए नारी की महत्ता को स्वीकार करता है। दूषित राजनीति की कटु आलोचना भी करता है। जमींदारी प्रथा के खात्मे के लिए उनकी अंतरात्मा की आवाज भविष्य के बोध का आभास करा देती है। विद्यार्थियों को संबोधित करते समय इसी विचारधारा को पल्लवित करते हैं– 'स्कूल–कॉलेज के छात्रों को पढ़ने की अवस्था में भी देश के काम में योग देने का, देश क स्वाधीनता–पराधीनता के बारे में सोचने–विचारने का अधिकार है।' शरत गांधी के चर्खा आंदोलन में आस्था रखते थे साथ ही भविष्य को दृष्टि में रखकर कल कारखानों की मशीन की भी अनदेखी न कर सके। भाषा, क्षेत्रीयता जैसी ज्वलंत समस्याओं का हल एकता के द्वारा करना सिखाया।

(छ) सहानुभूति एवं व्यावहारिकता : शरत का जीवन संवेदना का पुंज था। सामान्य मनुष्य जिस घृणित कार्य को करने पर हीनता का अनुभव करता है वहीं शरत ने इन्हीं दीन–हीन मनुष्यों में मानवता के दर्शन किये। इसीलिए सगे संबंधी न होने पर भी शवों का दाह संस्कार करते। निस्वार्थ भाव से दवा भी देते। देशबंधु को कर्त्तव्य बोध का ज्ञान कराते समय कहते हैं – 'स्त्री जाति के प्रति जो अन्याय, निष्ठुर सामाजिक अविचार अरसे से चला आ रहा है, उसका प्रतिविधान कीजिए। जमींदारों के अत्याचार से त्रस्त जनता का साथ कभी नहीं छोड़ते। इसीलिए गांव वालों के लिए शरत 'आपुन जन' बन गये थे। दरोगा द्वारा अपमानित होने पर भी बिना प्रतिकार के उसको माफ कर देना सहानुभूति को दर्शाता है। उपेंद्रनाथ और शरत के बीच वार्तालाप में व्यावहारिकता को देखा जा सकता है।

राजू : 'आवारा मसीहा' उपन्यास में शरत को शरत बनाने में जिस व्यक्तित्व का हाथ था उसमें 'राजू' का योगदान अविस्मरणीय रहा है। शरत को अगर बाल्यावस्था में राजू का साथ न मिलता तो उसकी कल्पना को रंगीन उड़ान मिलना संभव नहीं था। पतंग के द्वंद्व युद्ध ने शरत और राजू को एक प्लेटफॉर्म पर लाकर खड़ा कर दिया। साहस और संवदेनशीलता जैसे गुणों का शरत में जन्म राजू की पाठशाला ने प्रदान किय। 'आवारा मसीहा' के सहायक पात्रों में राजू के असाधारण व्यक्तित्व की छाप पाठक के मन मस्तिष्क पर छा जाती है। राजू के व्यक्तित्व में अदम्य साहस, संगीत के प्रति लगाव, आदर्श मित्र, कुशल अभिनेता, परोपकार से युक्त, संवदेनशीलता, कला, प्रेम से युक्त जैसी विशेषताएँ देखने को मिलती हैं। राजू की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन निम्नवत् है –

(क) साहसी प्रवृत्ति : राजू का व्यक्तित्व साहस व धैर्य की पराकाष्ठा का श्रेष्ठ उदाहरण है। शरत भी राजू के साहसी कार्यों से प्रभावित होकर मित्रता करने को बाध्य होता है। कुएं पर स्त्रियों के साथ अभद्र व्यवहार करने पर राजू में साहसी प्रवृत्ति जाग्रत हो जाती है। व्यक्ति को पानी में डुबोकर माफी मांगने पर बाध्य

करता है। जमींदार द्वारा भारतीयों पर हुए अत्याचार के प्रतिशोध स्वरूप रोज साहब राणे को पीटकर अपनी साहसी प्रवृत्ति का परिचय देता है।

राजू – ' फिर कभी किसी बेकसूर मुसाफिर को मारोगे?

साहबरोज – 'कभी नहीं।'

राजू – 'बोलो, माफ करो!'

साहबरोज – 'माफ करो!'

राजू – 'घर जाओ!'

साहब चुप चाप वहाँ से चला गया। बदली कराकर अन्यत्र चला गया।

(ख) कला प्रिय : राजू की सूक्ष्म दृष्टि ने अभिनय तथा संगीत द्वारा शरत को प्रभावित कर दिया था। शरत से मित्रता का माध्यम संगीत ही था। उसमें एक साथ बांसुरी और वीरता जैसे गुणों का भंडार था। मधुर स्वर में उसका गाना सभी को पसंद आता। हारमोनियम, कलेयरनेट को बजाने में दक्ष था। उसके गुणों को देखकर उसके पूर्व वंशज का अनुमान लगाया जा सकता था। अनेक दुर्गुणों के होने पर भी सभी को प्रिय था। नदी में नाव लेकर सैन करने से आनंदित होता। पतंग के द्वंद्व युद्ध में शरत को सोचने पर विवश करता।

(ग) आदर्श मित्र : राजू में जीवन में अपनी सहृदयता से सभी का मन आकृष्ट करने की अद्‌भुत क्षमता थी। जिससे मित्रता का हाथ बढ़ाता उसके साथ स्वयं को जोखिम में डालकर भी निभाने का प्रयत्न करता। विपत्ति में मुंह मोड़ना उसने नहीं सीखा। फुटबाल के मैदान में शरत की रक्षा करता। शरत को जब साँप काट लेता है तो राजू अपने प्राणों की बाजी लगाकर तूफानी गंगा में नाव लेकर ओझा को बुलाकर अपने मित्र की प्राण रक्षा करता है।

(घ) सेवा भाव : सेवा का भाव राजू के व्यक्तित्व की विशेषता थी। पारिवारिक उपेक्षा के फलस्वरूप राजू को सेवा करने में आनंद की अनुभूति होती। अंकिचन का सच्चा दास तथा दुष्ट मनुष्यों के लिए साक्षात् यमराज के समान व्यवहार करता। दाह–संस्कार करना, विवाह–पूजा के अवसर पर सेवा करने में पटु था। सपेरा उस्ताद तथा अन्नदा दीदी को विपत्ति की घड़ी में हिम्मत बंधाता था।

(ङ) अभिनय की कला में दक्ष : राजू ने व्यवहारशीलता के साथ अभिनय के द्वारा सभी को मोह लिया। गिरिजा और पागलिनी के अभिनय द्वारा यश अर्जित किया। वर्षों बाद भी राजू को दर्शक भूल नहीं पाए।

मोक्षदा : 'आवारा मसीहा' उपन्यास के नारी पात्रों में मोक्षदा का व्यक्तित्व पाठक के मन पर विशिष्ट छाप छोड़ता है। प्रारंभिक मोक्षदा बाद में हिरण्यमयीदेवी के नाम से पाठक के सामने आती है। शरत के व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाली नारी पात्रों में मोक्षदा नाम सर्वोपरि है। बड़ी बहू शरत की सच्ची हितैषी के रूप में मोक्षदा का ही रूप था। मोक्षदा के चरित्र में जिन विशेषताओं का पुंज देखने को मिलता है उसमें समर्पण की भावना, संवेदना से युक्त, लल्लाशील, प्रेरणामयी, व्यावहारिक, विनम्रतायुक्त, सौंदर्यमयी, सेवा भाव से युक्त, आदर्श पत्नी के रूप में अपने गुणों से प्रभावित करती है। उपरोक्त गुणों के आधार पर मोक्षदा का चरित्र चित्रण निम्नवत् है –

(क) समर्पण की भावना : मोक्षदा के व्यक्तित्व में समर्पण की भावना देखने को मिलती है। पिता के बाद शरत के रूप में साथ मिला। शरत की आशाओं पर अपने गुणों के कारण खरी उतरती है। शरत का जीवनपर्यंत

साथ निभाकर अपने जीवन को सफल बनाती है। सिर नीचे झुकाकर अपने मनोभाव को स्पष्ट कर देती है। मोक्षदा की ये खामोशी हृदय का भेद खोल देती है।

(ख) सेवा की भावना : मोक्षदा ने सेवाभाव के द्वारा शरत को बाह्य एवं आंतरिक रूप में आकर्षित कर लिया। बीमारी की अवस्था में शरत की सेवा करके नारीत्व के गुणों से अवगत कराती है। 'अब जी कैसा है?' मोक्षदा के इन विचारों ने शरत के जीवन को बदल दियां शरत रह रहकर सोचने पर विवश होता। माँ के बाद स्नेहमयी वाणी मोक्षदा के रूप में सुनने को मिली। मोक्षदा की सेवा से प्रसन्न होकर शरत यह कहने पर विवश होता है – 'तुमने मेरी बहुत सेवा की। मेरा सारा कष्ट जैसे तुमने ही सहा है। तुम खरे सोने के समान हो।'

(ग) सौंदर्य से युक्त : सौंदर्य की अवधारणा में दो विचारधारयें देखने को मिलती हैं। एक पक्ष सौंदर्य को बाह्य स्वरूप तक सीमित करता है, जबकि दूसरा आंतरिक सौंदर्य की वकालत करता है। मोक्षदा भले ही बाह्य रूप में सौंदर्य युक्त न थी लेकिन अपने नारी गुणों के कारण श्रेष्ठता को प्राप्त थी। शरत के अनुसार– 'अंगों की सुडौलता अद्‌भुत थी। वृष्टि से भीगे फूल–पत्तों जैसा लावण्य था, और स्नेहमयी भी वह कम न थी। वह अत्यंत सरल और अशिक्षित पर धर्मशीलता, पतिव्रता सेवामयी थी।

(घ) आदर्श पत्नी : मोक्षदा ने हिरण्यमयीदेवी के रूप में शरत का साथ कंधे से कंधा मिलाकर दिया। शरत के खाने–पीने की व्यवस्था रखती। मोक्षदा की सेवा के कारण ही शरत आवारा से मसीहा बन गया। शरत प्रेमासक्त होकर मोक्षदा को **'कल्याणियांशु'** कहकर संबोधित करते थे। डॉक्टर के पास जाते समय शरत के चरण स्पर्श करना नहीं भूलती– 'जब तक चरणोद्‌क न लूंगी खाना नहीं खाऊंगी' यह थी मोक्षदा की शरत के प्रति समर्पण की भावना। मोक्षदा के रूप में भारतीय नारी की झांकी देखने को मिलती है। जो पति को परमेश्वर मानती है। शरत को अगर मोक्षदा के रूप में भारतीय नारी का साथ न मिलता तो आवारापन में गंभीरता के गुण नहीं आते। शरत और मोक्षदा का विवाह भले ही अग्नि साक्षी मानकर न किया गया, समाज के ठेकेदारों ने मान्यता प्रदान न की, लेकिन जीवन संगिनी के रूप में मोक्षदा आदर्श पत्नी की भूमिका निभाती है।

(ङ) व्यावहारिकता से युक्त : मोक्षदा ने व्यवहार की पाठशाला में शिक्षा ग्रहण की। उसकी प्रतिष्ठा उनके वैयक्तिक जीवन में भी देखने को मिली। सामाजिक अवरोध एवं धार्मिक मान्यताओं के अपवाद स्वरूप हिरण्यमयीदेवी कभी शरत के संबंधियों में न गई, लेकिन द्वार पर आये प्रत्येक आगंतुक का हृदय से स्वागत करना नहीं भूलती थी। घर गृहस्थी की मीठी–मीठी बातें करती उनके प्यार की सीमा नहीं थी। घर पर उनका एकछत्र शासन था।

3.7 भाषा शैली : भाषा भावों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम होती है। भाषा जितनी सार्थक, व्यावहारिक एवं जनसामान्य की होगी वह रचना उतनी ही सर्वग्राह्य एवं प्रभावोत्पादक होगी। सहृदय के मन मस्तिक को आक्रांत करने में भाषा महती भूमिका निभाती है। मुहावरे, लोकोक्तियाँ, भाषा को सजीवता प्रदान करती हैं। लेखक की लेखिनी से निकला या लाया गया शब्द अर्थ गंभीरता के साथ लेखक के वैयक्तिक परिवेश को चरितार्थ करता है। बंगाली समाज में हिंदी में रचित कृति हृदय को आल्हादित करने के साथ युगीन समाज की झांकी प्रस्तुत करने में सक्षम है। आवारा मसीहा उपन्यास की भाषा में हिंदी के अतिरिक्त बांग्ला भाषा के भी दर्शन होते हैं। विष्णु प्रभाकर ने जनसामान्य की भाषा पर बल दिया– अलंकृत वाक्य का बोझ कितना पीड़ादायक है यह बात सिर्फ पाठक ही समझा सकते हैं। यह कथन जन सामान्य की भाषा की ओर संकेत करता है। लेखक ने भावानुकूल भाषा का प्रयोग कर सजगता का परिचय दिया है। भाषा के पचड़े में न पड़कर अभिव्यक्ति की सुगमता पर बल देकर भाषा को सुचारू ही नहीं बनाया, अपितु सहजता के गुणों से भी सुसज्जित किया। विष्णु प्रभाकर ने 'अंतर्स्पशीय भाषा' अपनाने

पर बल दिया।

मातृभाषा प्रेम : विष्णु प्रभाकर ने अभिव्यक्ति के लिए मातृभाषा को प्रमुखता प्रदान की, लेकिन परिस्थिति अनुकूल अंग्रेजी या अन्य भाषा के प्रयोग से भी परहेज नहीं किया। उनका मानना था कि अंग्रेजी भाषा को पढ़ने से अपनी संस्कृति एवं सभ्यता की भी रक्षा होनी चाहिए। युगीन सामाजिक एवं राजनैतिक घटना चक्र के लिए विदेशी भाषा पढ़ने में पीछे नहीं हटना चाहिए। स्वयं विष्णु प्रभाकर के शब्दों में – लेकिन मुझसे यह बर्दाश्त नहीं होगा कि हिंदुस्तान का एक भी आदमी मातृभाषा को भूल जाए, उसकी हंसी उड़ाए, या उसे यह भी लगे कि वह अपने अच्छे से अच्छे विचार अपनी भाषा में नहीं लिख सकता। स्वयं शरतचंद्र ने अंग्रेजी भाषा में चिट्ठी पत्री के लिए प्रयास नहीं किया। अपने तरुण मामाओं में बांगला भाषा और साहित्य के प्रति अनुराग की भावना पैदा की।

संस्कृतनिष्ठ भाषा की झलक विप्रदास रचना में देखने को मिलती है, जो शरत ने अपने मामा पर लिखी थी। संस्कृत के प्रति अनुराग के मूल में मामा की दिनचर्या परिलक्षित होती है। बांग्ला भाषा के प्रति समर्पण का उदाहरण आवारा मसीहा है। शरत ने वर्तमान की प्रस्तुति, समानाधिकार एवं देश समाज के ज्वलंत प्रश्नों तथा विश्व प्रेम की प्रस्तुति के लिए बांग्ला भाषा को प्रमुखता प्रदान कर अपनी मातृभाषा के प्रति समर्पण को स्पष्ट किया है। शरत और उपेंद्र बाबू के मध्य वार्तालाप में व्यावहारिकता का गुण भाषा को सजीवता प्रदान करता है। व्यावहारिक भाषा का उदाहरण देखा जा सकता है –

शरत बाबू – 'कहाँ जाते हो?'

उपेंद्रनाथ – 'अपने घर जाता हूँ।'

शरत बाबू – 'बहुत दूर से आए हो। बहुत दूर जाना है। आखिर चाय नाश्ता लेकर जाओ।'

भाषा को मर्मस्पर्शी बनाने के लिए रस अलंकारों का प्रयोग करना वांछनीय समझा जाता है। 'आवारा मसीहा' उपन्यास में कथात्मक भाषा का स्वरूप भी देखने को मिलता है। भावात्मक भाषा को उदाहरण द्वारा समझा जा सकता है – चारों ओर फैले हुए धान के खेत, प्रहरी के समान खड़े हुए केले और खजूर के पेड़ और पूरंपार भरी हुई नदी। आवारा मसीहा उपन्यास में आम भाषा के साथ शुद्ध साहित्यिक भाषा के दर्शन भी होते हैं। उदाहरण देखा जा सकता है –'रचनाओं की लोकप्रियता, कथा में नाटकीय तथ्यों की प्रधानता, पारिवारिक वातावरण और पात्रों में आत्मीयता, सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार यथार्थवादी अंतर्दृष्टि, प्रसाद गुण, पांजल, सरल, अंतर्स्पर्शीय भाषा कितने सारे गुण उस शक्ति का आधार थे। 'आवारा मसीहा' में बांग्ला भाषा के दर्शन स्थान–स्थान पर होते हैं। उदाहरण –

बंदर बांदर,

छिड़लो कोन चादर।

बांदर रूपी रूपी,

परेछिस केमन टूपी।

बांदर बांदर केन

खेएछिस फेन।

उपन्यास में बांग्ला भाषा में गानों का प्रयोग करके भाषा के सहृदयता प्रदान की गई। उदाहरण के रूप में –

अमि दुदिन आसिनि, दुदिन, आमिनि मुदिलि आंखि गोकुले मधु फूरा गेल, आंधार आजि कुंजवन।

भाषा को अनुभव की क्षमता प्रदान करने के लिए मुहावरों एवं लोकोक्तियों का प्रयोग भी किया गया है। उपन्यास में प्रयुक्त मुहावरों में हिंदी के दर्शन होते हैं। उपन्यास में प्रयुक्त मुहावरों से युगीन समाज में मनुष्यों की प्रत्युत्पन्नमति का बोध होता है। नौ दो ग्यारह होना, यह मुंह और मसूर की दाल, सांप मरे न लाठी टूटे, भैंस के आगे बीन बजाय, भैंस खड़ी पगुराय।

शैली – 'आवारा मसीहा' उपन्यास की शैलियों में सहजता, सरलता, प्रभावोत्पादकता एवं सजीवता के दर्शन होते हैं। व्यावहारिकता, संक्षिप्तता से शैली के साथ भाषा को सर्वग्राह्यता प्रदान की है। शैली के रूप निम्नवत् हैं –

संवाद शैली – संवाद शैली में वक्ता एवं श्रोता की प्रत्युत्पन्नमति की झलक दिखाई देती है। संवाद शैली का उदाहरण देखा जा सकता है –

मामा – 'तू कहाँ चला गया था रे?'

शरत – 'मैं गोदाम में था।'

मामा – 'क्या खाता था?'

शरत – 'वही जो तुम खाते थे।'

मामा – 'कौन देता था?'

शरत – 'छोटी नानी।'

इस शैली में हृदय की सरलता को देखा जा सकता है।

व्यावहारिक शैली – 'आवारा मसीहा' उपन्यास में विष्णु प्रभाकर ने पात्रों के द्वारा व्यवहार को स्थान–स्थान पर प्रस्तुत किया है। शरत घर आने वालों का खुले हृदय से स्वागत करते हैं। मीठा उपलब्ध न होने पर बताशे देना न भूलते।

रवींद्रनाथ – 'शरत तुहारे हाथ में यह पैकेट कैसा है?'

शरत – 'जी ऐसे ही एक चीज है।'

रवींद्र – 'क्या चीज है? कोई पुस्तक है?'

शरत – 'जी हाँ।'

भावात्मक शैली – आवारा मसीहा को संवेदनाओं का भंडार कहा जाए तो अत्युक्ति न होगी। उपन्यास में नारी की दयनीय स्थिति, देश की दुर्दशा, उपेक्षित वर्ग की मर्मवेदना में भावात्मक शैली के दर्शन होते हैं। शरत को संवेदना का जामा पहनाने में भावात्मक शैली ने खाद का कार्य किया है। स्वयं शरत का जीवन दया का पात्र था, लेकिन उसके व्यक्तित्व में स्वाभिमान की भावना से संवेदनात्मक पक्ष की ओर मित्रों, पाठकों, सगे संबंधियों का ध्यान नहीं पहुँच पाता था। नारियों की स्थिति को सुधारने का प्रयत्न करते हैं। ''स्त्री जाति के प्रति जो अन्याय, निष्ठुर सामाजिक व्यवहार अरसे से चला आ रहा है, उसका प्रतिविधान कीजिए।'' जमींदारों, कारिंदों के शोषण से त्रस्त जनता का समर्थन करते हैं। पीड़ित व्यक्तियों की सहायता भी करते थे। भेलू कुत्ते की मौत पर शरत की मनोदशा में भावात्मक शैली के दर्शन मिलते हैं– 'मेरा चौबीस घंटे का साथी नहीं रहा। जीवन में कितनु दुःख कष्ट पाये हैं, उनको भेलू ने बहुत बार तुच्छ कर दिया। दुःख के दिनों में उसके सहारे मेरा समय सुख से कट गया।'

भावों तथा संवेदना के लिए निश्चित व्यक्ति, परिवेश, घटना अपेक्षित नहीं होती। जन्मजात प्रवृत्तिगत गुणों से, निष्पक्ष भाव संवदेना के द्वारा ही अभिव्यक्त होते हैं। संस्कृत से युक्त लचीली व प्रवाहमयी भाषा उन्हें रवींद्रनाथ

से विरासत में मिली। शरत ने भाषा को सजहता, व्यापकता एवं सरलता से पूर्ण कर प्रभाव युक्त बनाया।

'अपनी प्रगति जांचिए'

15. मोक्षदा का अन्य नाम क्या था?

16. शरत के मित्र का नाम क्या था?

17. विष्णु प्रभाकर ने किस प्रकार की भाषा पर बल दिया है?

18. 'आवारा मसीहा' में किन शैलियों का प्रयोग हुआ है?'

19. शरत को कौन सी उपाधि प्रदान की गई है?

20. शरत की तुलना किससे की गई है?

21. शरत का संबंध किस दल से था?

22. स्वतंत्रता संग्राम में शरत के घनिष्ठ मित्र कौन थे?

23. शरत के भावात्मक पक्ष का उद्‌घाटन करने वाली रचना कौन सी है?'

3.8 सारांश :

आवारा मसीहा उपन्यास एक जीवनी परक रचना है। रोचकता, तटस्थता एवं वास्तविकता के गुणों से युक्त आवारा मसीहा समाज का प्रतिबिंब प्रस्तुत करता है। शरत चंद्र का जीवन भले ही महानता की परिधि में नहीं आता हो, लेकिन उनके द्वारा किये गए कार्यों से जीवनी की विशेषताएँ परिलक्षित होती हैं। आवारा मसीहा उपन्यास मानवीय भावों, संवेदनाओं का पिटारा कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। युगीन परिदृश्य, सामाजिक घटनाक्रम, राजनैतिक झांकी, आर्थिक विपन्नता का जीता–जागता चित्रण आवारा मसीहा उपन्यास की मूल संवेदना है। आवारा मसीहा संवाद की सभी विशेषताओं को चरितार्थ करता है। चरित्रोद्‌घाटन की दृष्टि से आवारा मसीहा के पात्र अपनी चारित्रिक विशेषताओं के कारण सर्वग्राह्य ही नहीं मर्मस्पर्शी भी हैं। इस प्रकार आवारा मसीहा मानवतावादी दृष्टिकोण से एक संवेदनशील उपन्यास की श्रेणी में आता है।

3.9 मुख्य शब्दावली :

आतुर – व्याकुल

प्रमाण – साक्ष्य

खिताब – पुरस्कार

कैफियत – स्थिति/दशा

दहल – हिलना

गर्त – धूल

अन्विति – मेल, एक भाव

कृत्रिम – बनावटी

अमिट – न मिटने वाला

माछ – मछली

सौगंध – कसम

3.10 'अपनी प्रगति जांचिए' के उत्तर

1. शरत की लेखनी का सान्निध्य पाकर नारियों में स्वाभिमान की भावना पैदा हुई।
2. अभया के द्वारा आधुनिक नारी की कल्पना की गयी।
3. शरत सामाजिक दुष्परिणामों के लिये परिस्थतियों को जिम्मेदार ठहराता है।
4. आवारा मसीहा जीवनी परक उपन्यास है।
5. आवारा मसीहा में शरत का जीवन प्रतिबिंबित है।
6. आवारा मसीहा में तीन परिच्छेद हैं।
7. मानवीय संवेदना का सफल चित्रण करना शरत के जीवन का लक्ष्य रहा है।
8. बचपन में शरत के प्रति उदार भाव रखने वाली शरत की दादी थी।
9. नारी चेतना, मानवतावादी भावना को व्यक्त करना ही शरत के लेखन का मूल उद्देश्य था।
10. आवारा मसीहा का केंद्रीय पात्र शरतचंद्र है।
11. आवारा मसीहा में मानवतावादी, देशप्रेम आदि भावनाओं का समावेश है।
12. नवीनता के लिए आग्रह करने वाला पात्र शरतचंद्र है।
13. संवाद को कथोपकथन के नाम से भी जाना जाता है।
14. संक्षिप्तता, यथार्थता संवादों की विशेषताएँ हैं।
15. मोक्षदा का अन्य नाम हिरण्यादेवी था।
16. शरत के मित्र का नाम राजू था।
17. विष्णु प्रभाकर ने जनसामान्य की भाषा पर बल दिया है।
18. आवारा मसीहा में व्यवहारिक, व्यंग्यात्मक, भावात्मक आदि शैलियों का प्रयोग हुआ है।
19. शरत को 'रंगून रत्न' की उपाधि प्रदान की गई।
20. शरत की तुलना रवींद्र नाथ टैगोर से की गई।
21. शरत का संबंध गरम दल से था।
22. 'देवदास' शरत के भावात्मक पक्ष का उद्घाटन करने वाली रचना है।

3.11 अभ्यास हेतु प्रश्न :

लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. आवारा मसीहा के नामकरण की सार्थकता सिद्ध कीजिए।
2. आवारा मसीहा के उद्देश्यों पर प्रकाश डालिए।
3. मोक्षदा की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
4. सहायक पात्र के रूप में राजू का चरित्र–चित्रण कीजिए।
5. आवारा मसीहा की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

1. आवारा मसीहा जीवनी प्रधान रचना है सिद्ध कीजिए।
2. आवारा मसीहा की संवाद योजना पर प्रकाश डालिए।
3. शरत के जीवन की विशेषताएँ लिखिए।

3.12 आप ये भी पढ़ सकते हैं।

1. महीप सिंह, विष्णु प्रभाकर – व्यक्ति और साहित्य, अभिव्यंजना प्रकाशन।
2. परमानंद श्रीवास्तव, उपन्यास का पुनर्जन्म, वीणा प्रकाशन।
3. मधुरेश, हिंदी उपन्यास का विकास, लोकभारती प्रकाशन।